# देश दर्शन

## तीर्थ-दर्शन

तीर्थ-दर्शन

के

कुछ प्रसिद्ध तीर्थ

१—अयोध्या
२—काशी
३—प्रयाग
४—हरिद्वार
५—नासिक
६—उज्जैन

कार्यालय — प्रयाग

जनवरी १९४२ ]

# देश-दर्शन

[ माघ १९९८

( पुस्तकाकार सचित्र मासिक )

वर्ष ३ ]

## तीर्थ-दर्शन

[ संख्या



सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०



प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

# ❋ तीर्थ-दर्शन ❋

समस्त भारतवर्ष पुण्य भूमि और तीर्थ भूमि है। यहां जन्म लेने वाले धन्य समझे जाते थे। फिर भी भारतवर्ष के कुछ स्थान विशिष्ट हो गये। वहां प्रकृति की सुन्दरता अथवा अन्य किसी दैवी चमत्कार के कारण दर्शन करने वाले अपने पापों और दुःखों से मुक्त हो जाते थे। इसी से ये स्थान तीर्थ बन गये। उनका दर्शन करने के लिये आजकल भी असंख्य लोग आते हैं। इन्हीं तीर्थों का संक्षिप्त परिचय अकारादि क्रम से देने का प्रयत्न किया जा रहा है। जिन तीर्थों का किसी कारण वश यहां समावेश न हो सका हो उनकी सूचना दयालु पाठक यथाशीघ्र दे दें। यदि और भी किसी प्रकार की त्रुटि रह गई हो वह भी सूचित कर दें जिस से द्वितीय संस्करण में यह पुस्तक तीर्थ यात्रियों के लिये और भी अधिक उपयोगी सिद्ध हो।

अपने आचार्यों ने प्रधान तीर्थों का क्रम इस प्रकार रक्खा है कि उनका दर्शन कर लेने से प्रायः समस्त भारतवर्ष की परिक्रमा हो जाती है।

गायन्ति देवा किल गीतिकानि धन्यास्तु ये भारत भूमि भागे।
स्वर्गीय वर्गस्य च हेतु भूते भवन्ति भूयः पुरुषा सुरत्वात्॥

(विष्णुपुराण २, ३-२४)

## अगस्त तीर्थ

यह अगस्त तीर्थ नाम की एक बावली है जो रामेश्वर महादेव के मन्दिर से चार पाँच सौ गज की दूरी पर ईशान कोण पर स्थित है।

## अग्नि तीर्थ

यह एक समुद्री घाट है जो श्री रामेश्वर जी के मन्दिर के पूर्व की ओर स्थित है। इस घाट पर प्रति वर्ष करोड़ों की संख्या में हिन्दू यात्री स्नान करने के लिये जाते हैं।

## अजन्ता

यह स्थान निज़ाम राज्य में है। अजन्ता नगर पचारा स्टेशन से ३४ मील की दूरी पर है। अजन्ता नगर से ४ मील की दूरी पर बन में अजन्ता की बौद्ध गुफा है। यहां अनेक गुफाएँ पहाड़ काट कर बनाई गई हैं। यह गुफायें दो हज़ार वर्ष से अधिक पुरानी हैं। यहां सात कुण्डों का झरना है। यहां कुल २७ गुफा-मन्दिर हैं जिनमें २२ बिहार और ४ हिन्दू मन्दिर हैं। गुफाओं की चित्रकारी अनोखी तथा अमूल्य है।

## अजगयबीथ नाथ

भागलपुर जिले में सुल्तानगञ्ज रेलवे स्टेशन से थोड़ी दूर पर जहांगीरा गांव के समीप श्री गंगा जी के बीच में एक शिला पर अजगयबीथ नाथ महादेव का मन्दिर है। यहां माघ की पूर्णिमा से फाल्गुन की शिवरात्रि तक मेला होता है।

## अजमेर

यह बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे का प्रधान स्टेशन तथा नगर है। यहां श्री नृसिंह जी और श्री लक्ष्मी नारायण के मन्दिर देखने योग्य हैं। ढाई दिन का झोंपड़ा स्थान भी देखने योग्य है।

## अनुरुद्धपुर

यह लंका की प्राचीन राजधानी है। लंका जाने के लिये साउथ इंडियन रेलवे स्टेशन पर टिकट मिल जाता है। समुद्र तट पर सामान मुफ्त में ही जहाज पर लद जाता है और स्वास्थ्य सम्बन्धी आज्ञापत्र लेना पड़ता है। यहां अब भी प्राचीन मठ, मन्दिर और स्नानागार देखने योग्य हैं। यहां लगभग ढाई हजार वर्ष का एक पीपल का वृक्ष है।

## अमरकंटक

यह एक पहाड़ी चोटी है जो रीवां राज्य में विंध्याचल पर्वत की एक अंग है। यह चोटी समुद्रतल से ३४०० फुट ऊँची है। इस चोटी से बहुत से झरने निकलते हैं। नर्मदा नदी और सोन नदी नर्मत देवी-स्थल से निकलती हैं। यहाँ पर नर्मदा नदी कपिल धारा नाम से प्रसिद्ध है। हिन्दू लोग कपिल धारा की परिक्रमा करते हैं। अमरकंटक चोटी पर बहुत से मन्दिर हैं जिनमें अमरनाथ महादेव और नर्मदा देवी दो सर्व प्रसिद्ध स्थान हैं। अमर कंटक जाने के लिये जी० आई० पी० रेलवे के पिंड्रा नामक स्टेशन पर उतरना पड़ता है। अमरकंटक तीर्थ पिंड्रा से ७ मील की दूरी पर स्थित है।

अग्नि पुराण, पद्मपुराण आदि अनेक धर्म ग्रन्थों में अमर

कंटक महात्म का वर्णन है। यह मध्य भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है।

## अमरनाथ

बम्बई प्रान्त में थाना जिले में अमरनाथ एक रेलवे स्टेशन है। बस्ती पहाड़ी है। बस्ती से पौन मील की दूरी पर अमरनाथ शिव का मन्दिर है।

## अमरनाथ

श्रीनगर (काश्मीर) से ४० मील उत्तर-पूर्व अमरनाथ महादेव का पवित्र मन्दिर है। इसका मार्ग बड़ा कठिनहै। मार्ग में अनेक धारायें तथा अनेकों रंग के बरफ के मैदान पड़ते हैं। अमरनाथ का दर्शन कर के बड़े भाग्यशाली पुरुष तथा महात्मा ही लौट कर आते हैं।। बर्फीली चट्टानों की इतनी अधिकता है कि मनुष्य की आहट से बरफ पड़ने लग जाती है। लोग केवल पैदल ही जा सकते हैं। ऊपर से नीचे लिंगाकार स्तम्भ के समान जल धारा सर्वदा गिरती रहती है। इसे शिवलिंग कहा जाता है। इसकी धारा को अमरगङ्गा कहते हैं इसमें स्नान करने से समस्त रोग दूर हो जाते हैं। यहाँ श्रावण मास में राखी पूर्णिमा का मेला लगता है।

## अमरावती

अमरावती मध्य प्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर तथा रेलवे स्टेशन है। यहां अम्बा का मन्दिर प्रसिद्ध तथा दर्शनीय है।

## अम्बकेश्वर

यह स्थान नासिक स्टेशन से १७ मील की दूरी पर है। नासिक। बम्बई प्रान्त में जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है।

त्र्यम्बकेश्वर महादेव का मन्दिर त्र्यम्बक नामी गाँव में है। नासिक स्टेशन से त्र्यम्बक को जाने के लिये मोटर मिलती है। १७८६ ई० में नाना साहब पेशवा ने त्र्यम्बकेश्वर महादेव का मन्दिर बनवाया था। मन्दिर में महादेव जी का रत्नों से जड़ा हुआ मुकुट तथा बहुमूल्य रथ देखने योग्य है।

## अम्बाजी

आबू रोड से १३ मील की दूरी पर प्रसिद्ध नदी है। यहाँ सरस्वती नदी पर कोटेश्वर महादेव तथा अम्बाजी की मूर्ति है। श्री कृष्ण का मुंडन यहीं हुआ था। रुक्मिणी जी इन्हीं देवी का पूजन करती थीं। नवरात्रि में मेला होता है।

## अमृतसर

यह पञ्जाब का एक प्रसिद्ध नगर तथा रेलवे स्टेशन है। यह सिक्ख मत की राजधानी है। नगर के मध्यवर्ती भाग में अमृतसर नामक सरोवर है। सरोवर के मध्य में ६५ फुट लम्बे-चौड़े चबूतरे पर सिक्खों का "स्वर्ण मन्दिर" है जिसे सिक्ख लोग दरबार साहब भी कहते हैं। यह मन्दिर देखने योग्य है। इसके सिवा और भी अनेकों मन्दिर तथा सरोवर नगर में हैं।

## अयोध्या

यह मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जन्म स्थान है। फैजाबाद जिले में सरयू (घाघरा) नदी के तट पर स्थित है और ई० आई० आर० का एक स्टेशन है। सरयू नदी का एक दूसरा नाम मानस-नन्दिनी (मान सरोवर झील से निकलने के कारण) भी है। यह नगर सप्तपुरियों में गिना जाता है। प्राचीन

काल में यह इक्ष्वाकु वंश के राजाओं की राजधानी थी। भगवान श्रीरामचन्द्र जी ने सूर्यवंश के राजा महाराज दशरथ की महारानी कौशिल्या की कोख में जन्म लिया था।

प्राचीन अयोध्या नगरी लुप्त सी हो गई है अब आधुनिक नगर के आस पास में केवल उसके खण्डहर शेष रह गये हैं। वर्तमान नगर प्रयाग से १०४ मील उत्तर है, काशी से इस नगर की दूरी १२० मील है।

## दर्शनीय स्थान :—

### जन्म स्थान

कहा जाता है कि इसी स्थान पर महाराज दशरथ ने पुत्रेष्टि नामक यज्ञ किया था। इसी स्थान पर १५२८ ई० में मुग़ल बादशाह बाबर ने मस्जिद बनवाई थी। सन् १८५५ ई० में हिन्दू मुस्लिम बलवा हुआ तो उसी समय बैरागी साधुओं ने मस्जिद के आगे एक बड़ा पक्का चबूतरा बनवा कर उस पर भगवान रामचन्द्र की मूर्ति स्थापित कर दी। अँग्रेज़ शासकों ने मस्जिद की आंगन में एक दीवार बनवाकर स्थान को दो भागों में बांट दिया है। दीवार के भीतर की ओर मुसलमान निमाज़ पढ़ते हैं और बाहर की ओर हिन्दू पूजा तथा दर्शन करते हैं। जन्म स्थान के समीप ही और दूसरे दर्शनीय मन्दिर हैं।

### रामकोट

रामकिला एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थान है।

### हनुमानगढ़ी

यह सरयू तट से १ मील दूर है। बर्तमान गढ़ो को पुरानी

गढ़ी के स्थान ही पर आसफुद्दौला के मंत्री ने बनवाई थी। इस गढ़ी में हनुमान जी की एक मूर्ति स्थापित है। यह एक उच्च कोटि की गढ़ी है और दर्शन करने योग्य है। श्री हनुमान जी की विशाल मूर्ति दर्शनीय है। गढ़ी में हिन्दू विरक्त महात्मा निवास करते हैं। उनके दर्शन का सौभाग्य भी यहां प्राप्त होता है।

### सुग्रीव और अङ्गद टीले

श्री हनुमान गढ़ी के दक्षिण की ओर यह दोनों टीले स्थित हैं। कुछ लोगों का कथन है कि सुग्रीव टीला बड़े बौद्ध मठ के स्थान पर ही स्थित है। इस मठ से ५०० फुट आगे की ओर वह प्रसिद्ध ऐतिहासिक बौद्ध स्तूप था जहां भगवान बुद्ध के नख और केश रक्खे हुये थे।

### कनक भवन

यह अयोध्या का सब से बड़ा तथा सुन्दर मन्दिर है। इस भवन को महारानी सीता का महल कहते हैं। आधुनिक मन्दिर को महाराज टीकमगढ़ नरेश ने कई लाख रुपये की लागत लगा कर बनवाया है। कनक भवन सचमुच ही कनक भवन है।

अयोध्या नगर के पश्चिमी भाग से पूर्व को ऋणमोचन, सहस्र धारा, लक्ष्मण घाट, स्वर्ग द्वार, गंगामहल, शिवाला घाट, जटाई घाट, अहिल्या बाई घाट धौरहरा घाट, रूपकला घाट, नया घाट, जानकीघाट और रामघाट आदि स्थान दर्शनीय हैं।

### लक्ष्मण घाट

इसी स्थान पर लक्ष्मण जी ने अपना शरीरान्त किया था।

इस घाट पर लक्ष्मण जी का मन्दिर है। लक्ष्मण जी की विशाल सुन्दर मूर्ति ५ फुट ऊँची है।

### स्वर्ग द्वार

लक्ष्मण घाट से दक्षिण सरयू नदी के तट पर स्थित है। यहां का दृश्य बड़ा ही मनोहर है। सनातनी हिंदू इसी घाट पर पिंड-दान करते हैं।

### नागेश्वरनाथ

स्वर्गद्वार के समीप नागेश्वरनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है। नागेश्वर नाथ महादेव की स्थापना श्रीरामचन्द्र जी के पुत्र कुश ने की थी। महाराज विक्रमादित्य ने इसी मन्दिर के आधार पर अयोध्या नगरी का पता लगाया था।

### श्रीरामचन्द्रजी का मन्दिर

नागेश्वर नाथ के पास ही स्थित है। यह सुन्दर मन्दिर एक गली में है। इस मन्दिर की मूर्तियाँ बड़ी प्राचीन हैं। पहले यह मन्दिर किसी दूसरे स्थान पर था। परन्तु जब बाबर ने प्राचीन मन्दिर को नष्ट कर दिया तो अयोध्या के ब्राह्मणों ने वहां से मूर्तियों को लाकर आधुनिक स्थान पर स्थापित किया। मन्दिर की मूर्तियां दर्शन योग्य हैं।

### त्रेतानाथ मन्दिर

यह अहिल्याबाई घाट के पास है। यह एक पुराना मन्दिर है। इसी मन्दिर का जीर्णोद्धार इन्दौर की होलकर रानी अहिल्या-बाई ने किया था।

### तुलसीदास मन्दिर

अहिल्याबाई घाट से पूर्व सरयू तट पर स्थित है। इस मन्दिर में प्रति संध्या एक हजार बत्तियों की आर्ती की जाती है।

इनके अतिरिक्त अयोध्या नरेश की सुप्रसिद्ध वाटिका, दर्शनेश्वर शिवलिंग, तुलसी चौरा, दतूनकुण्ड, सोनखर, सूर्यकुण्ड, रामकुण्ड आदि स्थान देखने योग्य हैं।

### नन्दीग्राम

अयोध्या से १६ मील दक्षिण की ओर है। यहां पर भरतकुण्ड नामक सरोवर है। हिन्दू लोग अयोध्या नगरी की परिक्रमा लगाते हैं। यह परिक्रमा ६ मील लम्बी है जिसमें बहुत से दर्शन करने योग्य मन्दिर तथा मूर्तियां हैं। आदि नाथ, अजित नाथ, अभिनन्दन, सुमन्त नाथ और अनन्त नाथ जैन तीर्थङ्करों के मन्दिर भी परिक्रमा में हैं। मन्दिरों में तीर्थङ्करों के चरण चिन्ह हैं जिनके दर्शन के लिये जैनी लोग दूर दूर से आते हैं।

अयोध्या में विन्दुवासिनी, लक्षमण लाल, हनुमान गढ़ी, हरनारायण दास, कन्हैया लाल और महन्त सुखराम दास आदि अनेक धर्मशालाएं हैं जहां पर हिन्दू यात्रियों को ठहरने के लिये अच्छा प्रबन्ध रहता है।

## अलन्दी

पूना से १३ मील की दूरी पर है। छोटी लाइन या मोटर द्वारा लोग पूना से जाते हैं। यहां श्री जैनेश्वर और इन्द्रानी का मन्दिर है। इन्द्रानी नदी का स्नान कर के यात्री शिव जी की पूजा के लिये जाते हैं।

## अहिल्या स्थान

श्री अहिल्या तीर्थ अहियारी में स्थित है। इस स्थान पर महर्षि गौतम अपनी स्त्री अहिल्या के साथ रहा करते थे। इन्द्र के छल के कारण महर्षि ने अपनी धर्मपत्नी को शाप दिया था जिससे वह पाषाण हो गई थी। श्री रामचन्द्र जी ने अपने चरण कमलों के रज से अहिल्या का उद्धार किया था।

## आबू

आबू रोड स्टेशन से १७ मील की दूरी पर समुद्रतल से ६५५० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। यह बड़ा ही रमणीक स्थान है।

यहां आध मील लम्बी नखी तालाब नामक एक रमणीक झील मैला तालाब के नाम से प्रसिद्ध है। महिषासुर के भय से देवतागण अपने नख से इस तालाब को खोद कर इसमें छिपे थे। यहां देलवाड़ा मन्दिर, वशिष्ठाश्रम और अर्बुदा मन्दिर देखने योग्य हैं।

## ओंकारेश्वर

श्री नर्मदा और कावेरी के संगम पर यह स्थान है। दोनों नदियों के बीच में मान्धाता नामक टापू है। टापू में पहाड़ी पर श्री ओंकारेश्वर महादेव का मन्दिर है। यहाँ कार्तिकी पूर्णिमा और शिवरात्रि का मेला लगता है। समीप ही कुबेर भण्डारी, गौमुख शिवपुरी, ब्रह्मपुरी, विष्णु पुरी, कपिल धारा, अमलेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग साव माता आदि दर्शनीय हैं।

## उज्जैन या अवन्तिका

ग्वालियर राज्य में उज्जैन का प्रसिद्ध नगर तथा स्टेशन है। यह भारत के सप्तपुरियों में से है। यहां पर महाकालेश्वर महादेव द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से हैं। यह क्षिप्रा नदी के तट पर बसा है। प्राचीन नगर अब नहीं रह गया है। यह श्री कृष्ण की शिक्षा भूमि और सान्दीपन मुनि का विद्यापीठ था। यहीं कालीदास रहते थे और महाराज विक्रम की राजधानी थी।

हरिसिद्ध देवी, गोपाल मन्दिर, विष्णु मन्दिर, सिद्धवट, सांदीपन ऋषि का आश्रम, भर्तृहरि की गुफा, कालिया दाहन महल आदि दर्शनीय हैं। कार्तिकी पूर्णिमा को यहाँ मेला लगता है। यहाँ १२ वर्ष पर कुम्भ का मेला लगता है।

## उदयगिरि और खण्डगिरि के गुफा मन्दिर

पुरी जिले में भुवनेश्वर से ५ मील की दूरी पर उदयगिरि और खण्डगिरि दो पहाड़ियां हैं। यहां शिला काटकर पहाड़ी में गुफा मन्दिर बनाये गये हैं। यह गुफा मन्दिर ईसा से ५० वर्ष पूर्व के बने हुये हैं। इन गुफा मन्दिरों में रानीनूर, गणेश गुफा, हाथी गुफा, सर्प गुफा और बाईं ओर की गुफाएँ देखने योग्य हैं।

## एलोरा मन्दिर

हैदराबाद राज्य में चालीस गाँव स्टेशन से २६ मील पश्चिम-दक्षिण और नन्दगाँव स्टेशन से ३६ मील दक्षिण-पूर्व देव गाँव होकर इलोरा गाँव मिलता है। यह अपने गुफा मन्दिरों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। यह गुफा-मन्दिर पर्वत काट कर बनाये गये हैं। इनकी शिल्पकला अद्वितीय है। यह मन्दिर अर्ध चन्दाकार

पहाड़ी में डेढ़ मील तक फैले हुये हैं। दक्षिण की ओर १२ बौद्ध गुफा-मन्दिर, १५ हिन्दू गुफा-मन्दिर और ५ जैनियों के प्रसिद्ध मन्दिर दर्शनीय हैं। इनके सिवा और भी सैकड़ों गुफा-मन्दिर हैं जो देखने योग्य हैं।

## एलिफेण्टा के गुफा-मन्दिर

बम्बई से ६ मील की दूरी पर थाना ज़िले में एलिफेंटा टापू है जिसे धारा पुरी या गारा पुरी भी कहते हैं। यहाँ पहाड़ी में तीन गुफा-मन्दिर हैं। यह गुफा-मन्दिर और मूर्तियाँ सभी पहाड़ी काट कर बनाये गये हैं। यहाँ ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र की मूर्तियां हैं। यहां का व्याघ्र मन्दिर ५० फुट लम्बा और १८ फुट ऊँचा है। यहां शिवरात्रि के समय मेला लगता है।

## कटासराज

झेलम ( पंजाब ) ज़िले में खेवरा से १० मील की दूरी पर कटासकुण्ड का बड़ा सरोवर है। सरोवर के पास बहुत से देव मन्दिर हैं। पड़ोस की एक छोटी पहाड़ी पर एक गढ़ का खंडहर है जिसके नीचे सात धारा नाम के टूटे फूटे मन्दिर हैं। कहते हैं पाँडवों ने इन्हीं मन्दिरों में अपने १२ वर्ष व्यतीत किये थे।

## कन्नौज

कन्नौज का रेलवे स्टेशन ( ई० आई० आर० ) कानपुर से ५० मील की दूरी पर है। इसे अश्वतीर्थ कहते हैं। यह एक प्राचीन स्थान है। ऋचीक ऋषि ने यहीं वरुण से कह कर अश्व प्रकट किया था। कन्नौज से २८ मील की दूरी पर रेवरेश्वर महादेव का स्थान है।

## कलकत्ता

भारतवर्ष का सब से बड़ा नगर तथा बन्दरगाह हुगली नदी के तट पर है। यहाँ पर श्री कालीजी का विशाल मन्दिर है। श्री कालीजी के नाम पर ही नगर का कलकत्ता नाम पड़ा है।

## कल्याणेश्वर

यह स्थान कलना नामक ग्राम में है।

## कपिलेश्वर

मधुबनी के पश्चिम है। यहाँ कपिल मुनि का आश्रम था। शिवरात्रि को मेला लगता है।

## करौली

यह करौली राज्य की राजधानी है। यहां कैला देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है।

## कर्ण प्रयाग

यह स्थान रुद्र प्रयाग से १८ मील, नन्द प्रयाग से २० मील और बद्रीनाथ धाम से लगभग ६८ मील की दूरी पर स्थित है। इस स्थान पर पिंडर गङ्गा आकर अलकनन्दा गंगा से मिलती हैं। इस तीर्थ की गणना पञ्चप्रयाग में है।

## काठमंडू

स्वतंत्र नैपाल राज्य की राजधानी है। यहां पर 'पशुपतिनाथ महादेव का विशाल मन्दिर है। सुगौली, रक्सौल, मीलसिमरावासा, मीलविचकी, मील चूड़िया घाटी, मील हिटाई, मीलभीमपदी, मील सीसागढ़ी, मील तांबा खानि, मील चिटंग, मीलथान-

कोट होकर काठमंडू पहुँचते हैं। फाल्गुन मास में शिवरात्रि को पशुपति नाथ का प्रसिद्ध मेला होता है। यहां के मुकुन्द नाथ जी का मेला मेष की संक्रान्ति को होता है।

## कामद्नाथ

यह स्थान उच्चेड़ गांव में है।

## कामाक्षा

आसाम में गौहाटी से २ मील उत्तर कामाक्षा पहाड़ी है। पहाड़ी पर सरोवर के निकट कामाक्षा देवी का मन्दिर है। भाद्रपद, आश्विन और माघ में बड़ा उत्सव होता है। कामाक्षा देवी बड़ी पूज्य हैं।

## काशी ( विश्वनाथपुरी ) या बनारस

यह भारत का प्राचीन नगर है। काशी में बनारस कैंट, बनारस सिटी और काशी ( राजघाट ) ई० आई० आर० और बी० एन० डब्ल्यू० आर० के स्टेशन हैं। विश्वनाथ जी का मन्दिर यहाँ प्रधान है। श्री गंगाजी पर सुन्दर घाट देखने योग्य हैं। यहाँ वरुण नदी गंगा से मिलती है।

काशी में विश्वनाथजी का मन्दिर, अक्षयवट, अन्नपूर्णा, ढुंडिराज गणेश और दण्डपति, आदि विशेश्वर, काशी करवट, गोपाल मन्दिर, काल भैरव, नैपाली मन्दिर, मान मन्दिर, राम नगर, हिन्दू विश्वविद्यालय आदि स्थान दर्शनीय हैं। यह नगर हिन्दू संस्कृति का केन्द्र माना जाता है।

## काला हस्ती

अर्काट ( मद्रास ) जिले में स्वर्णमुखी नदी के तट पर काला

हस्ती का तीर्थ स्थित है। काल ( सर्प ) और हस्ती के तप से शिव जो प्रसन्न हुए और उन्हीं के नाम पर कालहस्तीश्वर नाम से विख्यात हुए। कालहस्तीश्वर का मन्दिर पादमूल के निकट है। यहाँ शिवरात्रि के समय बड़ा मेला लगता है जो दस दिन तक रहता है। यह द्राविड़ जाति के पांच तत्व लिंगों में हैं।

## कालिका स्थान

पणुगानय नदी के तट पर नैपाल राज्यान्तर्गत सखराग्राम में है।

## कालायनी स्थान

मुंगेर जिले में है।

## कार्लीगुफा मन्दिर

पूना ( बम्बई ) जिले में कारली और लोनवली स्टेशनों के मध्य ६०० फुट ऊँची पहाड़ी है। यहीं बहुत से गुफा मन्दिर हैं जो पहाड़ काट कर बनाये गये हैं।

## किशनगढ़

किशनगढ़ स्टेशन किशनगढ़ राज्य में है। नगर में श्री ब्रजराज जी, मोहनलाल जी, मदन मोहन जी, नरसिंह जी और चिन्ता-मणि जी के सुन्दर दर्शनीय मन्दिर हैं।

## कुमारी तीर्थ

तिरुन वेली स्टेशन ( मद्रास ) से दक्षिण कुमारी अंतरीप में कुमारी देवी का मन्दिर है। यहां संगम पर स्नान करने में पार्वती जी का महात्म है।

## कुमारस्वामी

मद्रास प्रान्त में गादिगनूर रेलवे स्टेशन से १६ मील की दूरी पर पहाड़ी के ऊपर कुमार स्वामी का मन्दिर है। कुमार स्वामी को स्वामिकार्तिक, कार्तिकेय, स्कंद और षडमुख भी कहते हैं। कुमार स्वामी महादेव जी के पुत्र हैं। यहाँ कार्तिकी पूर्णिमा को मेला लगता है।

## कुम्भकोणम्

तंजौर ( मद्रास ) जिले में कुम्भ कोणम् रेलवे स्टेशन है। यहाँ कुम्भेश्वर जी का मन्दिर तथा महा-मोहन सरोवर है। हर बारहवें वर्ष यहाँ महा माघम का प्रसिद्ध मेला लगता है। इस अवसर पर सरोवर में श्री गंगाजी का शुभागमन होता है। यहाँ के पंडित प्रसिद्ध हैं। यह स्थान विद्या के लिये प्रसिद्ध है।

## कुरुक्षेत्र

इसे थानेश्वर भी कहते हैं। यह अम्बालर से २६ मील दक्षिण की ओर एक रेलवे स्टेशन है। कुरुक्षेत्र का मैदान ४० कोस में है। थानेश्वर सरस्वती नदी के तट पर है। यहाँ स्थाणुश्वर महादेव का मन्दिर है जिसके नाम पर इस नगर का नाम थानेश्वर पड़ा। यहाँ बहुत से सरोवर हैं जिनमें सर्व प्रसिद्ध कुरुक्षेत्र है। यही महाभारत का रण-स्थल है। यहाँ पर कौरव-पाण्डव और दूसरे देवताओं के मन्दिर हैं। प्रति वर्ष यहाँ दो तीन लाख यात्री दर्शन को आते हैं। सूर्यग्रहण के समय यहाँ बड़ा मेला होता है और लगभग १२ लाख यात्री भारत के कोने कोने से आकर एकत्रित होते हैं यहाँ सूर्यग्रहण पर स्नान और दान का महत्व है।

बड़े मैदान में दो तालाब हैं। बड़े तालाब में दुर्योधन आकर छिपा था और भीमसेन ने उसका बध किया था। तालाब में बीच बीच में मिट्टी पड़ गई है और बृक्ष उग आये हैं, समीप ही बान गङ्गा नामक स्थान है। इसी स्थान पर अर्जुन ने बाणशय्या पर पड़े भीष्म पितामह को बाण द्वारा जल निकाल कर जल पिलाया था।

## कुशेश्वर

यह स्थान श्रीनद नदी के तट पर रौना गाँव में है।

## कूपेश्वर

यह स्थान जयनगर स्टेशन के समीप है।

## श्री केदारनाथ धाम

यह धाम हरिद्वार से ९२ मील की दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि किसी समय शिव भगवान भैंसे का रूप धारण करके पहाड़ पर बिचर रहे थे। सहसा भीमसेन उसी मार्ग से निकल पड़े। उन्होंने शिव जी को जंगली भैंसा समझ कर प्रहार किया जिससे अगला धड़ पहाड़ में प्रवेश करके नैपाल में प्रकट होकर पशुपतिनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ और पिछला वहीं पत्थर हो गया जो श्री केदार नाथ नाम से प्रसिद्ध हुआ।

श्री केदार नाथ का मन्दिर बहुत सुन्दर बना हुआ है। परिक्रमा में बहुत से कुंड हैं। केदार नाथ जी द्वादशलिङ्गों में हैं। इनकी पूजा तथा सेवा का प्रबन्ध रावलजी के आधीन है। यहाँ मन्दाकिनी और सरस्वती का संगम है। यहां अनेकों दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है और सदाव्रत लगा हुआ है।

## कोणार्क

जगन्नाथ पुरी से १८ मील पूर्वोत्तर पुरी जिले में यह स्थान है। यहां सूर्य भगवान का विचित्र मन्दिर है। यहां माघ शुक्ल सप्तमी को मेला लगता है।

## कोल्हापुर

कोल्हापुर राज्य की राजधानी बम्बई प्रान्त में है। यहां महालक्ष्मी जी और दूसरे देव मन्दिर तथा गुफायें हैं।

## कौशिकाश्रम

कैशिकी नदी के तट पर है। समीप ही श्री कामेश्वर बाबा का मन्दिर है।

## कृष्ण मन्दिर

विरूपाक्ष तीर्थ के समीप ही दक्षिण की ओर पहाड़ी के बाद श्रीनरसिंह जी की बड़ी मूर्ति है जिस पर शेष जी का छत्र है। यह मूर्ति साढ़े बाईस फुट ऊँची है। पास ही शिवलिंग तथा श्रीकृष्ण जी का बड़ा मन्दिर है।

## गलता तीर्थ (जैपुर का)

यह स्थान जैपुर स्टेशन से साढ़े चार मील दूर है। जैपुर शहर के पक्के परकोटे (चारदीवारी) में सात दरवाजे हैं। पूर्वी दरवाजा सूरजपाल कहलाता है। इसे गलता दरवाजा भी कहते हैं। यहाँ से गलता पहाड़ी के लिये पक्की सड़क गई है। पहाड़ी पर चढ़ने के लिये पगडंडी बनी है। पहाड़ी की चोटी पर सूर्य का मन्दिर है। यहाँ से जैपुर शहर का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता

है। चोटी से नीचे उतरने पर गलता स्थान मिलता है। कहा जाता है कि महर्षि गालव इसी पहाड़ी पर तपस्या किया करते थे। उन्हीं के नाम से बिगड़ कर इस स्थान का गलता नाम पड़ा। कहते हैं उन्हीं की तपस्या के प्रभाव से पहाड़ी में से जल निकलने लगा। यह जल गंगा जल के समान पवित्र माना जाता है। जल सफेद पत्थर के बने हुये गोमुख से बराबर नीचे कुण्ड में गिरता रहता है। एक कुंड में पुरुष स्नान करते हैं दूसरे में स्त्रियाँ। स्त्रियों के कुण्ड के पास से मन्दिर आरम्भ हो जाते हैं। यहाँ बन्दर बहुत हैं। रात्रि के समय गलता की पहाड़ियों में बाघ भी विचरते हैं।

## गया

गया का जङ्कशन बिहार प्रान्त में है। इसके दो भाग हैं साहबगंज और पुराना गया। यह दोनों फल्गू नदी के तट पर हैं। यह श्राद्ध के लिये हिन्दुओं का प्रधान स्थान है। फल्गू नदी विष्णु पद, गदाधर, गयासिर, गयाकूप, आदि गया, धौतपद, भूमि गया, गोप्रचार, गायत्रीदेवी, संकठा देवी, प्रतिपा महेश्वर, ब्रह्मयोनि पर्वत, सरस्वती-सावित्री कुण्ड, सरस्वती नदी, पातंग वापी, धर्मारण्य, बकरौर सूर्यकुण्ड, जिह्वालोल, सीताकुण्ड, राम-गया, राम शिला और रामकुण्ड, प्रेतशिला और ब्रह्मकुण्ड, उत्तर मानस, ब्रह्मसरोवर, अक्षयबट, गदालोल, मंगलागौरी, आकाश गंगा, वैतरणी आदि स्थान दर्शनीय हैं।

## गढ़मुक्तेश्वर

यह स्थान मेरठ (यू० पी०) जिले में मेरठ से २६ मील दक्षिण

पूर्व की ओर श्री गंगा जी के दाहिने तट पर है। यहां को रेलवे लाइन तथा पक्की सड़क जाती है। प्राचीन काल में यह हस्तिनापुर का एक मुहल्ला था। यहां शिवजी का एक विशाल मन्दिर है। दो तीर्थ स्थान गढ़ के ऊपर और दो नीचे हैं। पास ही ८० सती स्तम्भ भी हैं। यहां कार्तिक पूर्णिमा को प्रतिवर्ष मेला लगता है जो आठ नौ दिन रहता है। मेले में दो तीन लाख यात्रियों की भीड़ होती है।

## गङ्गासागर

यह स्थान कलकत्ते से आगे लगभग ६० मील की दूरी पर है। डाइमंडहार्बर तक रेलवे जाती है वहां से नाव द्वारा जाना पड़ता है। यह हुगली के तट पर है। कलकत्ते से लोग अग्निबोट और स्टीमर द्वारा जाते हैं। यहाँ स्नान करने का महात्म है। गंगासागर में कपिल मुनि ने तप किया था उनका मन्दिर है। गंगासागर में मकर संक्रान्ति ( पौष और माघ ) के समय बड़ा भारी मेला होता है। मेले के लिये जंगल साफ कराना पड़ता है।

## गङ्गोत्री

यह स्थान हरिद्वार से लगभग १९४ मील की दूरी पर स्थित है। यहां श्री गंगा जी का मन्दिर है जिसमें गङ्गा जी की स्वर्ण रचित मूर्ति है। यहां श्री गङ्गा जी की एक संकरी धारा चारों ओर हिमाचल पर्वत से घिरी हुई बहती है। इसी के समीप गौरी कुंड है। १० मील आगे "गौमुखी धारा" है जहां से श्री गङ्गा जी की उत्पत्ति होती है। गोमुख शिला से श्री गङ्गाजी निकल कर बाहर आती हैं। यह स्थान सदैव बरफ से ढका रहता है केवल

श्रावण या भाद्रपद में बड़ी कठिनता से लोग पहुँच पाते हैं। देहरादून से भी गङ्गोत्री को मार्ग जाता है।

## गिरजा स्थान

श्री गिरजा स्थान दरभंगा जिले में है। यहीं जनक जी की कुलदेवी गिरजा महारानी स्थापित थीं।

## गिरिनार पर्वत

जूनागढ़ नगर से १० मील की दूरी पर गिरिनार पर्वत है जहाँ पर बहुत से हिन्दू तथा जैन देव-मन्दिर हैं। यहाँ बागेश्वरी देवी, और नेमीनाथ के मन्दिर, गौमुखी जैनमन्दिर, अम्बा का मन्दिर, गुरुदत्तत्रेय मन्दिर तथा अनेकों कुण्ड और मन्दिर दर्शनीय हैं।

## गोकाक का जल प्रपात

बेलगांव (बम्बई) जिले में गोकाकरोड स्टेशन है। स्टेशन से ४ मील की दूरी पर जल प्रपात है। प्रपात १७५ फुट ऊँचाई से गिरता है। कुण्ड के समीप देव मन्दिर हैं।

## गोपी तालाब तीर्थ

कच्छ खाड़ी से २ मील और द्वारिका जी से १२ मील पूर्वोत्तर गोपी तालाब कच्चा सरोवर है। यहाँ गोपी नाथ जी का मन्दिर है। तालाब से गोपी चन्दन निकलता है जिसका बड़ा महात्म है।

## गोला गोकर्णनाथ तीर्थ

यह लखीमपुर (यू० पी०) से २० मील दूर है। यहां को पक्की सड़क जाती है। यहां एक सरोवर के समीप गोकर्णनाथ महादेव का मन्दिर है। शिवरात्रि और चैत मास में मेला लगता है। मेले में लगभग २ लाख आदमी भाग लेते हैं।

## गौकर्ण तीर्थ

किनारा जिले (बम्बई प्रान्त) में गोकर्ण स्थान है। यहां महाबलेश्वर शिव जी का मन्दिर है। यहां महाबल नामक शिवलिंग है जिसे रावण ने महातप करके पाया था। यहां अनेकों देवताओं के स्थान हैं।

## गौतमकुंड

दरभंगा जंकशन से सीतामढ़ी ब्रांच पर कमतौल स्टेशन है यहां से २ मील नदी के तट पर अहिल्या की मूर्ति है। यहां गौतमकुण्ड तथा अहिल्या कुन्ड तीर्थ हैं। यहां चैत्र नौमी को मेला होता है।

## गौतमाश्रम

यह ब्रह्मपुर गाँव में है। यहीं न्याय दर्शन के आचार्य महर्षि गौतम रहा करते थे।

## घुमेश्वर

हैदराबाद राज्य में पैठन से ३० मील उत्तर बेसल स्थान है। बेसल से आध मील दूरी पर नदी के तट पर घुमेश्वर का मन्दिर है। यह श्री महादेव जी के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में है। मन्दिर मे आठों पहर दीपक जलता है।

## घृष्णेश्वर

दक्षिणी भारत में दौलताबाद से ६ मील की दूरी पर पहाड़ी की तलहटी में बेफिल नामक ग्राम है। ।वहां से थोड़ी दूर पर नदी के किनारे घृष्णेश्वर महादेव का मन्दिर है। इन शिवलिंग का नाम घृष्णा नामक स्त्री के तप के कारण हुआ।

## चक्रतीर्थ

विरुपाक्ष तीर्थ से आध मील दूरी पर ऋष्यमूक पहाड़ी है। पहाड़ियों के मध्य तुङ्गभद्रा नदी चक्कर काट कर बहती है उसी को चक्रतीर्थ कहते हैं। यहां श्री रामचन्द्र जी सूर्य, सुग्रीव, रंगजी आदि के मन्दिर हैं। पास ही सीता सरोवर, दक्षिण काशी, सीता भ्रमण के चरण के चिन्ह आदि दर्शनीय हैं।

## चन्देरी

ललितपुर स्टेशन से पश्चिम ग्वालियर राज्य में चन्देरी कस्बा है। प्रयाग-झांसी लाइन से जाना होता है। यहां का राजा शिशुपाल था पहले इसका नाम चेदी या चंदेजी था। महाभारत में इस नगर का वर्णन है। यहां पर कई एक मन्दिर हैं।

## चन्द्रोदय

डभोई ( बड़ौदा ) रेलवे स्टेशन तथा तीर्थ से १० मील दूरी पर चन्द्रोदय रेलवे स्टेशन है। यह नर्मदा और जर्ज के संगम के समीप स्थित है। काशी की भांति यह पवित्र तीर्थ तथा स्थान माना जाता है। यहां बहुत से मन्दिर हैं। प्रति पूर्णिमा को बड़ा मेला होता है। कार्तिक और चैत्र की पूर्णिमा को खासकर बड़ा मेला होता है।

## चांद तीर्थ

यह स्थान नागपुर ( उड़ीसा ) कमिश्नरी के चन्दा जिले का प्रधान कस्बा है। यहां पर अचलेश्वर महाकाली और मुरलीधर के तीन प्रधान मन्दिर हैं। यहां पर बैसाख मास में बड़ा मेला होता है।

## चिन्तपुर्णी

चिन्तपूर्णी देवी का मन्दिर होशियारपुर स्टेशन से लगभग १५ मील की दूरी पर पहाड़ी पर स्थित है। होशियारपुर से पैदल तथा मोटर मार्ग जाता है। यहां श्रावण मास में बड़ा भारी मेला लगता है।

## चिदम्बरम्

मद्रास प्रान्त में दक्षिणी अर्काट जिले में साउथ इंडियन रेलवे का स्टेशन है। रामेश्वरम् जाने वाली रेलवे का यह एक स्टेशन है। यहां भगवान रुद्र का प्रसिद्ध मन्दिर है। यहां के मणिलिंग की विशेषता यह है कि यदि एक ओर कपूर जलाया जाता है तो दूसरी ओर भगवान शंकर की मूर्ति दिखाई पड़ती है। यहां शिव गङ्गा तालाब बड़ा पवित्र माना जाता है।

## चित्रकूट तीर्थ

( सीतापुर ) यह स्थान बाँदा जिले में है। बांदा लाइन में कसई स्टेशन से उतर कर सीतापुर पक्की सड़क द्वारा जाना पड़ता है। वास्तव में चित्रकूट उस पहाड़ी को कहते हैं जिस पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी ने निवास किया था। चित्रकूट पांच कोस में स्थित है जिसकी परिक्रमा लोग करते हैं। सीतापुर मन्दाकिनी ( पयोष्मी ) गंगा के तट पर बसा है। चित्रकूट में सीतापुर, राघव प्रयाग, मन्दाकिनी घाट, रामघाट, स्फटिक शिला, कामद नाथ, चरण चिन्ह, जानकी कुण्ड, चरण पादुका, राम सैय्या, भरत कूप, हनुमान धारा, सीता रसोई, अनसूया गुप्त गोदावरी आदि स्थान दर्शनीय हैं। सचमुच ही यह तप भूमि है।

चित्रकूट से लोग राजापुर सड़क द्वारा जाते हैं। यह स्थान यमुना तट पर है और तुलसीदास जी का निवास-स्थान है।

## जगन्नाथ

श्री जगन्नाथ पुरी भारत के प्रधान तीर्थों में है। यह उड़ीसा प्रान्त में भारतवर्ष के पूर्वी समुद्र तट पर है। यह बी० एन० आर० का स्टेशन है। श्री जगन्नाथ और पुरी का वर्णन वेद में भी आता है। पुरी नगर समुद्र तट से १ मील की दूरी पर है। नगर के मध्य में नीलगिरि टीले पर श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर है। यह मन्दिर बड़ा विशाल बना हुआ है। इसकी कला देख कर लोग चकित हो जाते हैं। मन्दिर का बाहरी पारकोटा ६६५ फुट लम्बा और ६४० फुट चौड़ा है। पारकोटे की दीवार २० से २४ फुट तक है। इसमें चार फाटक हैं। पूर्वी सिंहद्वार सब से अधिक सुन्दर है। दूसरे पारकोटे की लम्बाई ४२० और चौड़ाई ३१५ फुट है। इस पारकोटे में भी चारों दिशाओं में फाटक हैं। मन्दिर, विमान, जगमोहन, नट मन्दिर और मण्डप चार भागों में विभाजित है। विमान में श्री जगन्नाथ जी की प्रधान मूर्ति है। मन्दिर में रत्नवेदी पर ६ फुट लम्बा सुदर्शन चक्र है। चक्र के दक्षिण में श्री जगन्नाथ जी, सुभद्रा और बलभद्र जी हैं। श्री जगन्नाथ जी के एक ओर लक्ष्मी जी, दूसरी ओर सत्यभामा और आगे राज इन्द्रद्युम्न की मूर्तियां हैं। श्री जगन्नाथजी की प्रतिमा ५ फुट ऊँची श्याम वर्ण की है। मूर्तियों के मस्तक पर हीरे जड़े हैं। यहाँ पर भगवान का प्रसाद (मुख्य कर भात) सभी जाति वाले खाते हैं।

उत्सव-ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को भगवान के स्नान का उत्सव

होता है। इसके सिवा रथयात्रा है। रथ खींचने के लिये ४२०० कुली लगते हैं। श्रावण शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक झूलोत्सव होता है। प्रतिवर्ष लाखों यात्री भगवान के दर्शन को आते हैं।'

पुरी के समीप मार्कण्डेय तालाब, चन्दन तालाब, इन्द्रद्युम्न तालाब, लोकनाथ महादेव, श्वेत गंगा, चक्रतीर्थ, स्वर्गद्वार, मलूक-दास का आश्रम, करमाबाई और पारस नाथ आदि स्थान दर्शनीय हैं। इसके अतरिक्त पुरी में और बहुत से मन्दिर तथा मूर्तियां देखने योग्य हैं।

## जनकपुर

जनकपुर रोड ( पुपुड़ी ) स्टेशन दरभंगा जंकशन से २६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। स्टेशन से २४ मील उत्तर-पूर्व तिरहुत में जनकपुर की बस्ती है। महाराज जनक यहीं रहते थे। यहाँ शिवजी, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत, शत्रुघ्न, महाराज जनक आदि की मूर्तियां मन्दिरों में हैं। यहां पर ५२ सरोवर तथा ५२ कुटियां हैं। गंगासागर, धनुषसागर, रामसागर, दशरथ तालाब, अग्निकुण्ड आदि प्रसिद्ध हैं। अगहन सुदी पञ्चमी और चैत्र सुदी नौमी को मेला लगता है। जनकपुर से प्रायः ६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर एक सरोवर के समीप विश्वामित्र जी का मन्दिर है। जनकपुर से १४ मील की दूरी पर बन में धनुषा नामक गाँव है। बस्ती के समीप ही एक सरोवर पर पाषाण का एक बड़ा धनुष पड़ा है। यात्री इस धनुष का दर्शन करने जाते हैं।

## जनकपुर तीर्थ

यह स्थान जगन्नाथ मन्दिर से डेढ़ मील दक्षिण-पूर्व है।
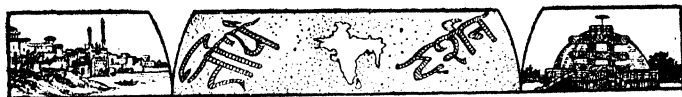
महाराज इन्द्रद्युम्न ने इसी स्थान पर विश्वकर्मा द्वारा भगवान की प्रतिमाओं का निर्माण कराया था। यहां भगवान का एक मन्दिर है। रथ यात्रा के समय सात-आठ दिन तक इसी मन्दिर में भगवान की मूर्तियां रहती हैं। यह मन्दिर जगन्नाथ जी के मन्दिर की भांति बना है। यह बहुत प्राचीन मन्दिर है।

## जम्बुकेश्वर

मद्रास प्रान्त में त्रिचनापल्ली जिले में श्री रंग टापू के भीतर जम्बुकेश्वर का प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर का विस्तार २०० बीघे में है। मन्दिर के पाँच घेरे हैं। पहले घेरे के फाटक का मार्ग ४०० स्तम्भ वाले मंडप को गया है। वहां तेप्पाकुल नामक प्रसिद्ध सरोवर है जिसमें झरने का पानी गिरता है। मन्दिर के दूसरे आंगन में ७९६ खम्भों का मंडप है और एक छोटा सा सरोवर है। चौथे घेरे में मन्दिर तथा एक छोटा सरोवर है। जम्बुकेश्वर शिवलिंग के पास सदैव एक हाथ से अधिक जल रहता है। शिवलिंग का ऊपरी भाग जल के ऊपर दिखाई पड़ता है। जम्बु-केश्वर के पीछे चबूतरे पर जम्बु का वृक्ष है। जम्बुकेश्वर शिवलिंग दक्षिण के ५ प्रसिद्ध शिवलिंगों में से है।

## जयपुर

यह राजपूताने की एक प्रसिद्ध रियासत है। जयपुर नगर तथा स्टेशन बांदी से ५६ मील पश्चिम है। जयपुर के समीप पहाड़ी पर सूर्य मन्दिर है और गौ मुखी द्वारा झरना गिरता है। इसे गलता तीर्थ कहते हैं। यहाँ पर रामचन्द्र सम्प्रदाय की एक

प्रधान गद्दी है। जयपुर के समीप अम्बेर तथा सांगानेर स्थान हैं जहाँ अनेक देवी देवताओं के मन्दिर हैं।

## जयमंगला स्थान

श्री जयमंगला का स्थान भागलपुर (विहार), जिले में है।

## जालन्धर

यह नगर पंजाब में है और अम्बाला से १०६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर एक रेलवे स्टेशन है। जालन्धर नामी दैत्य ने इस नगर को बसाया था जिसे शिव ने मारा था। प्राचीन नगर की निशानी के लिये अब केवल दो सरोवर शेष रह गये हैं।

## जलेश्वर

यह स्थान नैपाल राज्य में विरजा नदी के तट पर है।

## जूनागढ़

काठियावाड़ में यह एक देशी राज्य तथा नगर है। यहीं पर नरस जी का जन्म हुआ था। यहीं से उन्होंने द्वारिका के सांवल शाह के नाम हुंडी लिखकर भगवान से रुपये लेकर साधु सेवा में व्यय किये थे। स्वामी जी ने अपने तप-बल के कारण भगवान के दर्शन भी किये थे।

## जोधपुर

यह जोधपुर राज्य की राजधानी रेलवे स्टेशन है। यहाँ सात बड़े सरोवर हैं। जोधपुर में चैत्र मास में एक बड़ा धार्मिक मेला लगता है। जोधपुर के समीप ही मांडोर है जहां अनेक छतरियाँ बनी हुई हैं। समीप ही सर्व देवालय है जो तीस कोटि देवताओं के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है।

## ज्वालामुखी

होशियारपुर से ४९ मील और जालन्धर से ७४ मील उत्तर-पश्चिम की ओर पंजाब प्रान्त में ज्वालामुखी नामक क़स्बा है। ज्वालामुखी पहुँचने के लिये एक पहाड़ी सड़क है जिसमें तांगे और एक्के चलते रहते हैं। ज्वालामुखी में ज्वालामुखी देवी का मन्दिर है। मन्दिर के चारों कोनों पर अग्नि की १० जलती ज्वालाएँ हैं बीच में एक कुण्ड है जिसकी चारों दीवारों में अग्नि की चार जलती लपटें निकलती हैं। मन्दिर के समीप ही एक कूप में भी कई एक जलती लपटें हैं। एक दूसरे कुएँ का पानी खौलता हुआ है। इस स्थान को सदैव ही लोग दर्शन हेतु आते रहते हैं। आश्विन ( नौरात्र ) यहां खास मेला होता है और लगभग ५० हजार की भीड़ होती है। यहां जीवों का बलिदान मना है।

## डभोई

बड़ौदा से १४ मील पर डभोई का रेलवे स्टेशन है। यहाँ महाकाली जी का मन्दिर है।

## डाकौर

गुजरात प्रदेश में खेड़ा जिले में डाकोर का प्रसिद्ध तीर्थ है। यह रेलवे स्टेशन भी है। बड़ौदा से रेल द्वारा जाना होता है। यहाँ एक सरोवर तथा रणछोड़ जी का प्रसिद्ध मन्दिर है। यहां त्रिविक्रम जी का भी एक मन्दिर है। कार्तिक पूर्णिमा को बड़ा भारी मेला होता है जिसमें लाखों यात्री भाग लेते हैं। कहते हैं कि बुड़ान भक्त नामक ब्राह्मण प्रति वर्ष गोमती-द्वारिका में जाकर रणछोड़ भगवान की सेवा करता था। सन् १२३५ ई० में जब वह

वृद्ध हो गया तो रणछोड़ भगवान ने कहा कि "विप्र तुम एक गाड़ी ले आओ मैं तुम्हारे नगर को चलूँगा वहीं तुम नित्य मेरे दर्शन करना।" भगवान के कथनानुसार विप्र गाड़ी ले गया और भगवान गाड़ी पर डाकोर गये।

भगवान की मूर्ति की चोरी होने पर पुजारी लोग बुढ़ान भक्त पर सन्देह कर उसके यहां रणछोड़ भगवान की मूर्ति लेने गये। भगवान ने बुढ़ान से कहा "द्वारिका के पुजारी आते हैं तुम मुझे तालाब में छिपा दो।" ब्राह्मण ने वैसा ही किया। जब पुजारियों को ब्राह्मण के घर में श्री रणछोड़ जी की मूर्ति न मिली तो वह तालाब को भाले से टटोलने लगे। भाले की टक्कर मूर्ति में लगी और मूर्ति निकाल ली गई (मूर्ति में अब भी भाले के टक्कर का निशान है)। बुढ़ान भक्त ने पुजारियों को मूर्ति के बराबर सोना मूर्ति के बदले में देने को कहा। इस पर पुजारी राजी हो गये। ब्राह्मण ने बहुत सा सोना लाकर मूर्ति को तौलना चाहा किन्तु मूर्ति का पलरा नहीं उठा। इस पर भगवान के स्वप्नानुसार ब्राह्मण ने अपने स्त्री के कान की बारी रक्खी तो पलरा उठ गया। उसी समय भगवान ने पुजारियों को स्वप्न में मूर्ति छोड़ जाने का आदेश किया और कहा गोमती द्वारिका में गोमती गंगा का माहात्म रहेगा। मेरी एक मूर्ति लडुआ गांव के पास धरती में गड़ी है उसे लाकर बेट द्वारिका में स्थापित करो। मैं ७ पहर डाकोर और एक पहर बेट द्वारिका में रहूँगा। पुजारियों ने भगवान के कहने के अनुसार मूर्ति निकाल कर बेट द्वारिका में स्थापित किया।

## तञ्जौर

यह मद्रास प्रान्त में कावेरी नदी के तट पर रेलवे स्टेशन तथा सदर स्थान है। यहां दो किले हैं और शिव गंगा सरोवर, बड़ा शिव मन्दिर नन्दी की विशाल मूर्ति, पार्वती जी, गणेश जी, कार्तिकेय और चण्डी आदि के मन्दिर देखने योग्य हैं।

## तप्तकुण्ड

पुरी जिले में कटक से लगभग ३१ मील की दूरी पर बाघमारी गांव है। इसी के समीप तप्त कुण्ड नामक कूप है। इसका जल सदैव खौलता रहता है। कूप से थोड़ी दूर पर तारकेश्वर महादेव का मन्दिर है। वहां मकर की संक्रांति के समय एक महीना मेला लगता है।

## तरनतारन

यह तीर्थ व्यास और सतलज नदियों से उत्तर की ओर अमृतसर से बारह मील की दूरी पर सिक्खों का पवित्र स्थान है। अमृतसर से तरन तारन को पक्की सड़क जाती है। यहां पर एक बड़ा सरोवर है जो कोढ़ी सरोवर को तैर कर पार कर जाता है। उसका कुष्ठ रोग अच्छा हो जाता है। इस स्थान को सिक्खों के पांचवें गुरु अर्जुन मल ने नियत किया था। बैसाख की अमावस्या को यहां मेला लगता है।

## तारकेश्वर

यह स्थान हुगली जिले में है। हावड़ा से चौदह मील उत्तर की ओर सेवड़ा फूली का स्टेशन है। सेवड़ा फूली से तारकेश्वर स्टेशन को रेलवे जाती है। यहीं दूध गंगा नामक पूखरा पोखरे

के पूर्वी किनारे पर तारकेश्वर का मन्दिर है। तारकेश्वर महादेव में शिवरात्रि और मेष की संक्रांति को मेला लगता है।

प्राचीन काल में इस स्थान पर विकट बन था और बन में भगवान शिव की मूर्ति पड़ी थी। एक ग्वाले की कपिला गाय नित्य प्रति शिव मूर्ति पर जाकर दूध चढ़ा आती थी। जब ग्वाले को रोज़ गाय का दूध न मिलने लगा तो उसे आश्चर्य हुआ। दूध का उसने पता लगाना चाहा तो उसने प्रत्यक्ष देखा कि उसकी गाय शिव मूर्ति को दूध पिलाती है। भगवान शिव गाय के कारण ग्वाले पर प्रसन्न हुये और उसे दर्शन दिया तभी से वहां मन्दिर बनाया गया।

## तिरीवत्तूर

मद्रास से २६ मील की दूरी पर तिरीवत्तूर का रेलवे स्टेशन है। कस्बे में वरदराज ( श्री राघवाचार्य ) का मन्दिर है। मूर्ति बड़ी विशाल है। प्रति अमावस्या को मेला लगता है।

## तिरुवन्द्रम्

यह स्थान पश्चिमी घाट के समुद्र तट पर तिनेवेली स्टेशन से लगभग ६५ मील दक्षिण पश्चिम है। यहाँ ऊँची दीवारों से घिरा हुआ तिरुवन्द्रम क़िले में अनेक महल, पद्म नारायण का मन्दिर तथा अनेक गोपुर दर्शनीय हैं।

## तिरुत्तनी

मद्रास से पचास मील की दूरी पर आरकोनम और रेनीगुण्टा जंकशनों के मध्य में है। यहाँ पहाड़ की चोटी पर श्री सूब्रह्मण्या स्वामी का प्रसिद्ध मन्दिर है। बस्ती में स्कन्ध जी का मन्दिर है।

यहाँ बहुत से कुण्ड हैं। यहां प्राचीन काल में लोग अपनी जिह्वा काट कर देवता गणों को अर्पण करते थे।

## तिरुनलवेली

तुतिकुड़ी ( मद्रास प्रान्त ) स्टेशन से १८ मील पश्चिमोत्तर ताम्रपर्णी नदी के बाएँ किनारे से डेढ़ मील पर यह स्थान है। यहाँ १६ बीघे में एक बड़ा शिव मन्दिर है। तिरुनलवेली जिले में ही पाप-नाशन तीर्थ है। यहाँ पर जल-प्रपात के समीप मन्दिर है।

## तुंगभद्र

यह नगर तुंग भद्रा नदी पर स्थित है। काशी से दक्षिण जाने वाले यात्री यहाँ पतित पावनी श्री तुंग भद्रा में स्नान करते हैं। यहाँ से ९ मील की दूरी पर राघवेन्द्र स्वामी का मन्दिर है।

## तेप्यकुलम्

यह स्थान मदूरा रेलवे स्टेशन के समीप श्री रामेश्वर के मार्ग में वेगा नदी के उत्तर है। तेप्यकुलम् तामिल भाषा का शब्द है जिसका अर्थ बड़ा सरोवर होता है। यह सरोवर लगभग १२०० गज़ लम्बा और इतना ही चौड़ा है। सरोवर के मध्य भाग में एक टापू है जहाँ एक मन्दिर तथा बाटिका है। प्रत्येक कोण पर भी मन्दिर हैं। उत्सव के समय यहां सरोवर पर एक लाख दीप जलाये जाते हैं।

## तोताद्रि

यह स्थान मद्रास में तिरुनलवेली रेलवे स्टेशन से ४० मील दूरी पर है। यहाँ श्री रामानुज सम्प्रदाय की मुख्य गद्दी है। यहां

तोताद्रिनाथ भगवान, क्षीराब्धि पुष्करिणी और रामानुज के दर्शन होते हैं।

## द्वारिका

काठियावाड़ प्रायद्वीप के पश्चिमोत्तर कोण में द्वारिका नगर तथा बन्दरगाह है। यह प्रसिद्ध तीर्थ है। यह भारत के चार धामों और पवित्र सप्त पुरियों में गिना जाता है। यहां रणछोड़ भगवान या श्री द्वारिकाधीश जी का मन्दिर प्रधान है। माधव, लक्ष्मी-नारायण, देवकी माता गुरु दत्तात्रेय, पुरुषोत्तम जी, अम्बाजी, कुशेश्वर शिव जी, कोला भक्त, मोक्ष द्वार, प्रद्युम्न जी, जाम्बवती, राधा, सत्य भामा, गद्दी शंकराचार्य, भंडार, दुर्वासाजी, त्रिविक्रम जी, बलभद्र जी और स्वर्ण द्वार आदि दर्शनीय हैं। द्वारिकाजी में संगमघाट, नारायणघाट, बासुदेवघाट, गऊघाट, ब्रह्मघाट, सुरधन घाट सरकारी घाट और संगम घाट प्रसिद्ध हैं।

नगर में निष्पापकुण्ड गोवर्धन दास, सौमित्री बावली, अघोर-कुण्ड, अक्षयबट, भद्रकाली, आशापुरी माता, कैलाश कुण्ड और जय-विजय के स्थान दर्शनीय हैं।

## देव प्रयाग

यह हरिद्वार से ५९ मील की दूरी पर हैं। हरिद्वार से यहां तक पक्की सड़क है और मोटर आती है यह रमणीक स्थान पहाड़ पर अलकनन्दा गङ्गा के दोनों तट पर बसा है। यहाँ अलकनन्दा और भागीरथी गंगा का संगम है। यहाँ घाट के ऊपर एक विशाल मन्दिर में श्रीशङ्कराचार्य की स्थापित की हुई श्रीरामचन्द्र जी की मूर्ति है।

देव प्रयाग और रुद्र प्रयाग के मध्य रामपुर चट्टी, विल्वकेदार, श्रीनगर और भट्टी सेटा चट्टी आदि स्थान है जो दर्शनीय हैं।

## देवयानी

यह सांभर स्टेशन (जो फुलेरा जंकशन से चार पांच मील दूर है) शुक्राचार्य की पुत्री और राजा ययाति की स्त्री देवयानी के नाम पर इस स्थान का नाम देवयानी पड़ा। यहां एक सरोवर के पास कई छोटे छोटे मन्दिर हैं जिनमें शुक्राचार्य देवयानी आदि की मूर्तियाँ हैं। इसी स्थान पर शर्मिष्टा ने देवयानी को कुएँ में डाला था और राजा ययाति ने उसे निकाल कर विवाह किया था। वैशाख की पूर्णिमा को यहाँ एक बड़ा मेला लगता है।

## देवी पत्तन

रामेश्वरम् टापू से पश्चिम सेतुमूल के पास देवी पत्तन तीर्थ है। यह सेतु बंधु रामेश्वर का क्षेत्र माना जाता है। यहाँ सुन्दरी देवी और तिलकेश्वर महादेव का मन्दिर है। यहीं से सेतु का आरम्भ हुआ था। यहां नवग्रह, श्री रामचन्द्र जी की चरण पादुका, चक्रतीर्थ, वैङ्कटेश की चतुर्भुज मूर्ति आदि दर्शनीय हैं।

यहां से २५ मील पश्चिम दर्भशयन तीर्थ है। यहां के प्रधान देवता शेष शायी चतुर्भुज भगवान हैं। कहा जाता है श्री राम चन्द्र जी ने इसी स्थान पर कुशआसन पर बैठ कर समुद्र से पार जाने के लिये मार्ग मांगा था।

## देवीपाटन

गोंडा जिले (यू० पी०) में बलरामपुर स्टेशन से १४ मील उत्तर देवी पाटन गाँव है। यहाँ पटेश्वरी देवी का मन्दिर प्रसिद्ध

है। इसी स्थान पर मालिती नगरी थी जहां महाराज कर्ण धनुष विद्या सीख कर राज्य करते थे।

## देहू

पूना स्टेशन से १० मील पर और शेलखाची स्टेशन से ४ मील की दूरी पर यह स्थान है। यहां सन्त तुकाराम जी ने तपस्या करके मोक्ष प्राप्त किया था। यहां सन्त तुकाराम और विद्वानों के मन्दिर हैं। रामगिरि जहां सन्त तुकाराम ने तपस्या की थी देखने योग्य है।

## द्रोणगिरि

बद्रीनाथ से काठगोदाम लौटते समय त्रिवेश्वर चट्टी के आगे यह पर्वत है। इस पर्वत पर अनेकों प्रकार की जड़ी बूटियां पाई जाती हैं। श्री लक्ष्मण जी के शक्ति लगने पर श्री हनुमान जी इसी पर्वत का एक अंग उखाड़ ले गये थे।

## धनुषकोटि

यह स्थान रामेश्वरपुरी से १२ मील दक्षिण की ओर है। कुछ यात्री श्री रामेश्वर से समुद्री नाव द्वारा यहां जाते हैं। धनुष कोटि में धरती की नोक पानी में प्रवेश कर गई है। नोक के एक ओर का समुद्र महादधि और दूसरी ओर का रत्नाकर कहलाता है। यात्री लोग यहां स्नान करके स्वर्ण के छोटे धनुष का दान देते हैं। यहां ग्रहण के समय स्नान करने का बड़ा मेला होता है।

## धापड़ी कुण्ड

मोरटक्का स्टेशन ( जी० आई० पी० आर० ) से लगभग

२० मील पर धापड़ी घाट का प्रसिद्ध जल प्रपात है। स्टेशन से कच्ची सड़क होकर जाना पड़ता है। प्रपात का जल ५० फुट की ऊँचाई से गिरता है। जहां जल गिरता है वहां से गोले पत्थर निकलते हैं जिन्हें लोग शिव मान कर पूजन करते हैं।

## नदिया (नवद्वीप)

नदिया (बंगाल) प्रान्त में रेलवे स्टेशन तथा नगर है। यह गंगा और खडुआ नदी के संगम के समीप है। नदिया में ही श्री चैतन्य महाप्रभु का जन्म श्री जगन्नाथ मिश्र के घर में हुआ था। यहाँ पर पुजमान, बूढ़ा शिव और श्री गौरांग महाप्रभु के मन्दिर हैं। माघ मास में यहां पर बड़ा मेला लगता है।

## नन्द प्रयाग

यह स्थान बद्रीनाथ धाम से ५६ मील है। यहां पर मन्दाकनी और अलक नन्दा गंगा का संगम है। यहां पर नन्द और गोपाल जी का मन्दिर है।

## नंजनगुड़ी

मैसूर रेलवे स्टेशन से १५ मील दक्षिण की ओर नंजनगुड़ी का स्टेशन है। यह कब्वानी और गुण्डल नदी पर है यहां नजुड़ेश्वर शिव का मन्दिर है। प्रतिमास की पूर्णिमा और चैत्र तथा अगहन मास में मेला लगता है।

## नाग पट्टनम्

तंजौर (मद्रास) जिले में यह एक स्टेशन तथा बन्दरगाह है। यहां शिव, पार्वती और सुन्दर राज भगवान के मन्दिर हैं। यहां से लोग स्टीमर द्वारा रामेश्वरम् जाते हैं।

## नागेश्वर

बेट द्वारिका की खाड़ी से ५ मील दक्षिण पश्चिम नागेश्वर नामक शिव मन्दिर तथा पार्वती मन्दिर हैं।

## नागेश्वर

हैदराबाद राज्य में गोदावरी तट पर गंगाखेड़ स्थान है। वहाँ से ३० मील की दूरी पर अवढा स्थान है जहाँ नागेश्वर महादेव का मन्दिर है।

## नाथ द्वारा

चित्तौड़गढ़ से नाथद्वारा जाना पड़ता है यहां का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है और उसमें लाखों रुपये की सम्पत्ति लगी है। मन्दिर में श्री नाथ जी की मूर्ति स्थापित है। मन्दिर बहुत बड़ा है भगवान के दर्शन नारियल लेकर होते हैं।

## नारायणसर

सिंध नदी के पूर्वी मुहाने के समीप नारायणसर नामक बस्ती है। यह एक पवित्र तीर्थ है। यहां आदि नारायण गोवर्धननाथ जी और श्री लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर है। पास ही कोटेश्वर महादेव का मन्दिर दर्शनीय है।

## नासिक

नासिक का स्टेशन बम्बई प्रान्त में है। यह गोदावरी के तट पर समुद्र से १९०० फुट की ऊँचाई पर है। यह दक्षिण का काशी कहलाता है। प्रति बारह वर्ष में जब सिंह राशि के बृहस्पति होते हैं तो नासिक में कुम्भ का बड़ा मेला होता है। यहां पञ्चवटी में

बहुत से मन्दिर हैं। यहां अनेकों मन्दिर तथा दर्शनीय स्थान हैं। यह श्री निम्बार्काचार्य की जन्म भूमि है। ब्रह्मयोनि, विष्णुयोनि, रुद्रयोनि, मुक्तियोनि और अग्नियोनि यहां पर प्रसिद्ध पवित्र कुण्ड हैं। गोदावरी और कपिला के संगम पर सप्त ऋषियों का स्थान है।

## निदवन्दा

यह स्टेशन पूना से बंगलौर जाने वाली लाइन पर है। शिव-गंगा जाने के लिये यह सब से अधिक समीप स्टेशन है। शिव-गंगा गुफा में एक बड़ा मन्दिर और पाताल गंगा नामक कुण्ड है जिसके तह का पता अब तक नहीं चला है। पहाड़ी के चोटी पर दो स्तम्भ हैं जिनमें से शरद ऋतु में एक बार जल निकलता है। मकर संक्रान्ति के दिन यहां पर बड़ा भारी मेला लगता है।

## निम्बार्क तीर्थ

( निम्बग्राम )—गोबर्धन गिरि से पश्चिम बरसान वाले मार्ग में लगभग दो मील की दूरी पर भगवान श्री निम्बार्काचार्य के नाम से प्रसिद्ध निम्बग्राम आचार्य प्रभु की तपो भूमि श्री निम्बार्क तीर्थ है। रास मंडल चबूतरे के नीचे आचार्य प्रभु की तपो गुफा है। पास ही सुदर्शन नामक कुण्ड है जिसमें स्नान नहीं वरन् आचमन होता है। इस कुण्ड का पानी नहीं सूखता। ग्राम का दूध इस तालाब के सम्बंध से ही जमता है अन्यथा अवश्य ही फट जाता है।

निम्बार्क महाप्रभु ने श्री राधिका कृष्ण जी की आराधना की थी और उन्हें साक्षात्कार हुआ था। यहाँ निम्बार्क महाप्रभु और श्री कृष्ण राधिका के मन्दिर दर्शनीय हैं।

## नीमसार

सीतापुर जिले में गोमती नदी के तट पर है। यहां प्राचीन काल में ऋषियों ने बैठकर पुराणों की रचना की थी। प्रत्येक अमावस्या को मेला लगा करता है और सोमवती अमावस को बड़ा भारी मेला होता है।

## पंढपुर

यह शोलापुर (बम्बई) जिले में एक कस्बा तथा रेलवे स्टेशन है। इसी स्थान पर श्री विट्ठलनाथ जी का प्रसिद्ध मन्दिर है।

## पनानृसिंह तीर्थ

मद्रास प्रान्त मे बेजवाड़े से ७ मील दक्षिण-पश्चिम पङ्गल-गिरि नामक स्टेशन है। पहाड़ी पर नृसिंह जी का मन्दिर है। नृसिंह भगवान को पना गुड़ अथवा शक्कर का शर्बत पिलाया जाता है।

## पम्पासर

विरूपाक्ष तीर्थ से ३ मील की दूरी पर पम्पासर सरोवर है। यहाँ के सरोवर पहाड़ियों से घिरे हैं। इसी पहाड़ी प्रदेश को किष्किंधा कहते थे। बाली यहीं का राजा था। इसी स्थान पर श्री रामचन्द्र व लक्ष्मण जी ने निवास करके बानर सेना का संगठन किया था।

## परणी बैद्यनाथ

यह हैदराबाद राज्य में गोदावरी तट पर गङ्गाखेड़ स्थान से

१६ मील और घुमेश्वर से ८० मील की दूरी पर परणी नामक ग्राम है। इसी गांव के पास पहाड़ी पर शिवजी का मन्दिर है।

## परशुराम

भारत की पूर्वोत्तर सीमा पर जहां ब्रह्मपुत्र नदी हिमांचल को छोड़ कर आसाम में प्रवेश करती है वहीं पर परशुराम ने अपना परशु त्याग किया था।

## परशुराम पुरी ( सलेमाबाद )

यह किशनगढ़ से ७ मील की दूरी पर स्थित है। यहां श्रीराधा माधव जी का विशाल तथा श्री सर्वेश्वर भगवान का छोटा मन्दिर है। यहां श्री निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रधान गद्दी है।

## पक्षी तीर्थ

मद्रास से दक्षिण चिंगलपट्ट स्टेशन से ६ मील दूरी पर पहाड़ी के ऊपर पक्षी तीर्थ है। यहां दो सफेद चील्ह पले हैं जिन्हें धार्मिक यात्री खीर और घी खिलाते हैं। इनका दर्शन मङ्गलदायक है। पास ही एक कुण्ड तथा ब्रह्मेश्वर महादेव के मन्दिर हैं।

## पारसनाथ

हज़ारी बाग जिले में गिरिडी रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से पश्चिम-दक्षिण पारस नाथ की पहाड़ी के पादमूल के पास तक १८ मील सड़क है। हजारी बाग में पूर्वी बाग में जैन लोगों का पवित्र तीर्थ पारसनाथ है। अस्मद शिखर समुद्र के धरातल से ४४८८ फुट ऊँची है। पहाड़ी पर छोटे छोटे २० जैन मन्दिर हैं। पारस नाथ जैन सन्त की समाधि यहीं पर है।

## पांडवेश्वर महादेव ( बांदा )

बांदा शहर में कई मन्दिर हैं। एक छोटी पहाड़ी पर पांडवेश्वर महादेव का मन्दिर है। कहा जाता है कि पांडवों ने अपने बनवास के समय यहां निवास किया था। इसी से यह नाम पड़ा।

## पुनपुन

यह पटना से ८ मील दूरी पर रेलवे स्टेशन है। शास्त्र के अनुसार गया की श्राद्ध यहीं से आरम्भ होती है।

## पुष्कर

प्रसिद्ध स्टेशन अजमेर से ७ मील की दूरी पर पहाड़ियों के मध्य श्री पुष्कर राज्य का प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां श्री ब्रह्मा जी का विशाल मन्दिर है। श्री बद्रीनारायण जी बाराह जी, आत्मेश्वर महादेव और सावित्री मन्दिर देखने योग्य हैं। पुष्कर के पास ही डेढ़ कोस के घेरे में पुष्कर झील है जहां से सरस्वती नदी निकलती है। पुष्कर के किनारे गौघाट, ब्रह्माघाट, यज्ञघाट, बद्रीघाट, कोटतीर्थ घाट, परशुराम घाट आदि हैं। नागकुण्ड, चक्रकुण्ड और गङ्गा कुण्ड भी प्रसिद्ध हैं।

## पोनेरी

यह तीर्थ स्थान अरानी नदी के तट पर है। यहां विष्णु और शिवजी का मन्दिर है। कहते हैं मेले के दिनों में दोनों देवताओं का मिलन होता है।

## पोरबन्दर ( सुदामापुरी )

( सुदामापुरी ) काठियावाड़ के पश्चिमी तट पर पोरबन्दर राज्य की राजधानी तथा बन्दरगाह है। यहां श्रीकृष्ण भगवान, सुदामा, केदारनाथ और वैद्यनाथ के मन्दिर हैं। इस नगर में सभी घर तथा स्थान पत्थर के हैं। पत्थर लकड़ी की भांति चीरा फाड़ा जाता है। यहां से लगभग ४० मील की दूरी पर माधवपुर बन्दरगाह है जहां ब्रह्मकुण्ड तथा कृष्ण भगवान का प्रसिद्ध मन्दिर है। इसी स्थान पर रुक्मिणी जी का विवाह श्री कृष्ण जी के साथ हुआ था।

## प्रयाग तीर्थराज

यह नगर श्रीगंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर स्थित है। प्र का अर्थ श्रेष्ठ और याग का अर्थ यज्ञ का है। यहां प्राचीन काल में बड़े श्रेष्ठ यज्ञ हुये हैं इसी से इसे प्रयाग राज कहते हैं। यवन साम्राज्य में इसका नाम इलाहाबाद पड़ा है। यह ई० आई० आर० रेलवे का जंकशन है। यहां प्रति वर्ष संगम पर माघ मास में त्रिवेणी स्नान का मेला होता है। हर बारहवें वर्ष कुम्भ मेला होता है। प्रतिवर्ष मेले में २५ या ३० लाख मनुष्य भाग लेते हैं।

प्रयाग में ६ स्टेशन हैं ( १ ) इलाहाबाद ( कछपुरवा ) ई० आई० आर० ( २ ) नैनी ( जी० आई० पी० ) ( ३ ) प्रयाग ( एलनगंज ) ई० आई आर० ( ४ ) इलाहाबाद सिटी (रामबाग) बी० एन० डब्लू० आर० रेलवे लाइन पर है।

### दर्शनीय स्थान

त्रिवेणी, वेणी, माधव, अक्षयवट ( किले के भीतर गुफा की

लगभग ५० देव मूर्तियाँ ) मनकामेश्वर, सोमनाथ, बिन्दुमाधव और छतनगा, झूँसी, दशाश्वमेश्वर, महादेव, श्री बेणी माधो का मन्दिर, बासु की, शिवकुटी, भरद्वाज आश्रम, अलोपी देवी आदि स्थान हैं।

इनके सिवा और भी बहुतेरे देवी देवताओं के मन्दिर तथा स्थान दर्शनीय हैं।

## बटेश्वर

यमुना नदी के किनारे एक प्रसिद्ध स्थान है। कार्तिक शुक्ल पक्ष को यहां भारी मेला लगता है। इसके पड़ोस में राजा शूरसेन का किला था। इसी से बटेश्वर के पड़ोस का गांव शूरीपुर कहलाता है। कहा जाता है कि यहां के राजा बदन सिंह और काशी के राजा में निश्चय हुआ कि यदि दोनों में एक दूसरे के क्रमशः लड़का और लड़की हो तो उनका विवाह सम्बन्ध हो जावे दैव योग से राजा बदन सिंह के लड़की हुई लेकिन उन्होंने इसे लड़का ही घोषित किया और उसे पुरुष भेष में रक्खा। अतः जब काशी नरेश के लड़की पैदा हुई तो पूर्व निश्चय के अनुसार दोनों का विवाह हो गया। बाद को जब दोनों पुत्रियों की भेंट हुई तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ और वे यमुना में डूबने के लिये कूद पड़ीं। दैव योग से दोनों जोवित निकाल ली गईं। सब से अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि राजा बदन सिंह की लड़की यमुना से निकलने के बाद पुरुष रूप में बदल गई। इस से राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई और उसने इसी के उपलक्ष में महादेव जी का एक बड़ा मन्दिर बनवाया। पास ही बट या बरगद का वृक्ष

होने से इस स्थान का नाम बटेश्वर पड़ गया। आगे चलकर यहां श्री कृष्ण, महावीर, गणेश आदि के कई मन्दिर बन गये। काशी नरेश की लड़की का नाम नारंगी था। इसी से जिस स्थान पर वह निकाली गई वह इस समय भी नारंगी बाग कहलाता है।

## बड़ौदा

यह बड़ौदा राज्य की राजधानी तथा बड़ौदा रेलवे का मुख्य स्टेशन है। यहां श्री विट्ठलजी खण्डोबा देवी, स्वामी नारायण और अनेकों देवी देवताओं के मन्दिर हैं।

## बम्बई

भारतवर्ष का एक बड़ा नगर पश्चिमी तट पर है। यहाँ मुम्बा देवी, महारानी बाग, महालक्ष्मी का मन्दिर, द्वारिकाधीश का मन्दिर, बालकेश्वर का मन्दिर दर्शनीय हैं।

## बलवाकुण्ड

चटगांव (बंगाल) जिले में बलवा कुंड रेलवे स्टेशन है। यहीं बलवा कुण्ड प्रसिद्ध है। कुण्ड में जल के ऊपर ज्वालामुखी की भांति सदैव आग जलती रहती है।

## ब्रह्मपुत्र क्षेत्र

आसाम प्रान्त की सरहद पर रंगपुर स्टेशन है। वहां से यात्रा-पुर जाना पड़ता है। यात्रापुर ब्रह्मपुत्र नदी पर है। वहां से चिल मारी घाट जाना पड़ता है। चिलमारी को ही ब्रह्मपुत्र क्षेत्र कहते हैं। यहां चैत्र सुदी अष्टमी को ब्रह्मपुत्र स्नान का मेला लगता है। यहीं पर परशुरामजी तप करके मातृ हत्या से विमुक्त हुये थे।

## बाई

सतरा रोड (बम्बई प्रान्त) स्टेशन से सतारा-महाबलेश्वर सड़क पर कृष्णा नदी के किनारे बाई स्थान है। यहां माधव जी, लक्ष्मी जी, गणेशजी और महादेव जी आदि के मन्दिर हैं।

## बादामा

बम्बई प्रान्त में गदगद जंकशन से उत्तर की ओर ८२ मील पर बादामी नामक स्टेशन एम० एस० एम० आर० का है। यहां तीन हिन्दुओं के गुफा मन्दिर तथा एक जैन गुफा मन्दिर है।

## बाढ़

बिहार प्रान्त में बांकीपुर से ३९ मील की दूरी पर यह रेलवे स्टेशन है। यह गंगा तट पर है। यहां कई एक मन्दिर हैं जिनमें उषानाथ महादेव का मन्दिर प्रधान है।

## बाराह

नैपाल राज्य में धवलागिरी पर्वत पर कोशी नदी के तट पर बाराह क्षेत्र है। यहां चतुर्भुज बाराह भगवान का मन्दिर है। यहां कार्तिकी पूर्णिमा के समय लगभग ८ दिन तक मेला होता है। इसी पवित्र क्षेत्र में विश्वामित्र जी ब्राह्मण बने थे।

## बाबा उग्रनाथ

यह स्थान पंडौल के पास भवानीपुर गांव में है। मन्दिर से मिला हुआ विद्यापति कूप है। उग्रजा रूप शंकर जी यहीं अन्तर्हित हुये थे।

## बालाजी

रेनीगुराटा जङ्क्शन से ६ मील पश्चिम तिरुपदी का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से १ मील दूरी पर सुवर्णमुखी नदी है। पहाड़ी पर ऊपर की तिरुपदी पर बालाजी का मन्दिर है। मन्दिर जाने के लिये ६ मील की चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। पहाड़ी पर कोई जूता पहिन कर नहीं जा सकता है। यहां बहुत से देव मन्दिर हैं। यह पुष्कर्ण सरोवर, पापनाशनी गङ्गा, कपिल धारा और लक्ष्मी जी का मन्दिर देखने योग्य है।

## बालमीकि मुनि का स्थान

बिठूर से ६ मील पश्चिम गंगा तट से डेढ़ मील की दूरी पर बौला रुद्रपुर स्थान है। इसका प्राचीन नाम द्वौलव था। इसी नगर में बालमीकि ऋषि का जन्म हुआ था। श्री सीता जी को लक्ष्मण जी यहीं छोड़ गये थे। जब श्री सीता जी के पुत्र हुये तो ऋषि ने उस बन को मंत्र से कील दिया था। इसी कारण यहां के निवासी अब भी अपने घरों के किवाड़ नहीं बन्द करते हैं। जो प्राणी किवाड़े बन्द करता है वह सुखी नहीं रहता है। गाँव में चोरियाँ नहीं होतीं। यहीं ऋषि जी ने बालमीकि रामायण की रचना की थी।

## बीस नगर

बड़ौदा राज्य में बीस नगर का रेलवे स्टेशन है। यहां ६ प्रकार के नागर ब्राह्मणों में से एक का प्रधान स्थान है। यहां स्वामी नारायण का एक दर्शनीय मन्दिर है। इस नगर को ग्यारहवीं सदी में बिसलदेव ने बसाया था।

## बेट द्वारिका

कच्छ की खाड़ी में बेट द्वारिका का छोटा टापू है। यहां रुक्मिणी जी, मुरलीमनोहर, हनुमानजी, पद्मेश्वर, रामचन्द्र, श्री कृष्ण के महल मन्दिर, शङ्ख नारायण, रणछोर जी, लक्ष्मी-नारायण तथा अनेकों दूसरे देव मन्दिर दर्शनीय हैं।

## बौद्ध गया

यह स्थान गया से ७ मील दक्षिण है। भगवान बुद्ध ने यहां तप किया था। उन्होंने अपने अन्तिम जीवन का अधिकांश भाग यहीं व्यतीत किया था। यहां बौद्ध गया का मन्दिर महाराज अशोक का बनवाया हुआ है। मन्दिर अद्वितीय है। बौद्ध सिंहासन, बौद्ध गुफाएँ तथा दूसरे मन्दिर देखने योग्य हैं।

## बिठूर

गंगा नदी के किनारे कानपुर से १२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। यहां के ब्रह्म घाट दर्शनीय हैं। इन्हें राजा टिकैतराय ( अवध के नवाब के मन्त्री ) ने बनवाया था। यहां कार्तिकी पूर्णिमा को गंगा स्नान का मेला लगता है। यहीं अन्तिम पेशवा बाजीराव को रहने की आज्ञा मिली थी। बाद को नाना साहब का स्थान होने के कारण हैवलाक ने पेशवा के महल को तुड़वा डाला।

## बौद्ध स्तूप

पंजाब प्रान्त में लबनी स्टेशन से २ मील की दूरी पर पत्थर स्तूप है। इस स्तूप में प्राचीन सिक्के मिले हुए हैं। इसके गुम्बज का व्यास १२५ फुट और घेरा ५०० फुट है।

# श्री बद्रीनाथ धाम

केदारनाथ से बद्रीनाथ धाम लगभग ८१ मील की दूरी पर है। यह पुरी मन्द्राचल पर्वत के ऊपर अलकनन्दा गंगा के तट पर स्थित है। श्री बद्रीनारायण का मन्दिर ४५ फुट ऊँचा है। सभा-मंडप के पश्चिम ओर वाले मन्दिर में श्री बद्रीनारायण की श्याम पाषाण की मूर्ति है। मूर्ति के मस्तक पर हीरा जड़ा हुआ है। इस मूर्ति की स्थापना नारद कुंड से निकाल कर श्री शंकराचार्य ने की थी। भगवान की मूर्ति लगभग एक हाथ लम्बी है। प्रति वर्ष लगभग ३० हजार यात्री श्री बद्रीनाथ के दर्शन को जाते हैं। स्थान संकीर्ण होने से केवल २५ आदमी एक साथ दर्शन कर सकते हैं। भगवान को प्रति दिन १० मन चावल का भोग लगता है जो यात्रियों के मध्य बांट दिया जाता है।

### दर्शनीय स्थान

तप्तकुण्ड—इसमें दो गरम और एक शीतल धारा है। यहां यात्री स्नान करते हैं। इसके सिवा और भी बहुत से कुण्ड हैं। कपाल शिला, गणेश गुफा, व्यासाश्रम, मुचुकुन्द गुफा आदि सुन्दर स्थान हैं। मुचुकुन्द से तिब्बत, मानसरोवर और कैलाश को मार्ग जाता है। शतपथ तथा चक्रतीर्थ आदि दर्शनीय स्थान हैं। शतपथ के आगे पाण्डवों का स्वर्गारोहण मार्ग है। बद्रीनाथ का मन्दिर अप्रैल से अक्तूबर तक खुला रहता है। शेष ६ महीने तक मन्दिर बन्द रहता है। इस काल में भगवान की अचल मूर्ति के सिवा वहां कुछ नहीं रहता है। मन्दिर में एक ज्योति-दीप जला करता है। जब मन्दिर बरफ से ढक जाता है तो भी यह ज्योति-दीप

नहीं बुझता और अप्रैल में मन्दिर खुलने पर वैसे ही जलता हुआ पाया जाता है।

केदारनाथ और बद्रीनाथ के बीच में लगभग ३१ चट्टियां हैं।

## भड़ौंच

नर्मदा नदी के मुहाने पर भड़ौंच नगर तथा बन्दरगाह है। भादों मलमास में यहाँ बड़ा मेला होता है। इसको भृगु ऋषि ने बसाया था। यहाँ कई एकदर्शनीय स्थान हैं। इसका प्राचीन नाम भृगुपुर है।

## भद्रकालिका

यह स्थान मधुवनी के समीप कोइल खापुर गाँव में है।

## भद्राचलम्

बेजवाड़ा सिकन्दराबाद लाइन पर यह स्टेशन है। यह नगर गोदावरी तट पर है। यहां श्रीरामचन्द्रजी का बड़ा भारी मन्दिर है। यहाँ सीता जी की खोज करते हुए श्रीरामचन्द्रजी ने वास किया था। प्रति रामनवमी पर मेला लगता है।

## भीमताल

संयुक्तप्रान्त में नैनीताल से लगभग ४ मील आगे भीमताल है जो १ मील लम्बा और आध मील चौड़ा है। पूर्व की ओर भीमेश्वर शिव जी का मन्दिर है। तालाब देखने योग्य है।

## भीमशंकर

आसाम में गोहाटी से १ मील ऊपर यह मन्दिर है। कामरूप कामाक्षा का दूसरा नाम डाकिनी भी है। यह स्थान दर्शनीय है।

## भीमशंकर

पूना ज़िले में तेलगाँव स्टेशन से लगभग २४ मील की दूरी पर भीमशङ्कर महादेव का मन्दिर है। यहीं श्री शंकर जी ने कुम्भकरण के पुत्र भीम नामक राक्षस का बध किया था जिसने कामरूप के राजा को परास्त कर यहीं बन्दीघर में डाला था।

## भुवनेश्वर

कटक ( उड़ीसा ) से १५ मील दक्षिण भुवनेश्वर बस्ती है। यहां भुवनेश्वर, रामेश्वर, कपिलेश्वर और भास्करेश्वर के मन्दिर हैं। भुवनेश्वर क्षेत्र में पहले ७ हज़ार मन्दिर थे।

## भुवनेश्वरी

यह स्थान भगवतीपुर गांव में है।

## भूतपुरी

तिरूवत्तूर ( मद्रास ) जंकशन ( समुद्रतट ) से १२ मील दक्षिण भूतपुरी रामानुज स्वामी का जन्म स्थान है। यहां केशव भगवान, श्रीरामानुज स्वामी के मन्दिर और एक बड़ा सरोवर है। सरोवर में स्नान करने से बड़ा फल होता है। भूतों के नाम पर ही इस स्थान का नाम भूतपुरी हुआ और भूतगण विष्णु जी के कहने से शंकर जी के गण हुए। यहां बैशाख सुदी द्वादशी, मृगसिरा नक्षत्र में चतुर्थी और चैत्र सुदी सप्तमी और पूर्णिमा को मेला लगता है।

## भैरव स्थान

मुजफ्फरनगर ( यू० पी० ) ज़िला में लखनदेई नदी पर है।

## नंगलागिरि

गंटूर तालुके में बेजवाड़ा से गुंतकल जाने वाली लाइन पर स्थित है। यहां दो विष्णु मन्दिर हैं। यह हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है।

## मदुरा

यह मद्रास प्रान्त में साउथ इण्डियन रेलवे का प्रसिद्ध स्टेशन तथा नगर है। यहां मीनाक्षी देवी और सुन्दरेश्वर के मन्दिर प्रधान हैं। मन्दिर के द्वार पर सुनहरा स्तम्भ है। एक बड़ा विशाल मण्डप है जिसके बनवाने में १० लाख स्टार्लिङ्ग (सोने का मुद्रा) व्यय हुए थे।

## मथुरा ( ब्रजमंडल ) तीर्थ

यह संयुक्तप्रान्त का प्रसिद्ध पश्चिमी नगर है। यहां ई०आई० आर० का स्टेशन है। यहां श्वेत बाराह, श्रीकेशवदेव, योगमाया, कृष्ण जन्म भूमि मन्दिर, कंस निकन्दन, ध्रुव टीला, सप्तऋषि टीला, गौतम समाधि, महाविद्यादेवी मन्दिर, श्री द्वारिकाधीश, श्री गोविन्ददेव जी, श्री गोकुलेशजी, श्री दाऊ जी, श्रीनारायण, श्री मथुरानाथ जी, श्री रंगेश्वर महादेव, गोकर्णेश्वर, वेणीमाधव आदि मन्दिर दर्शनीय हैं। यमुना जी के २४ घाट और ब्रज के ११ कूप प्रसिद्ध हैं। मथुरा में चार द्वार तथा चार रेलवे स्टेशन हैं। प्रदक्षिणा करने पर मधुवन, तालवन, कुमुदवन, बहुलावन, राधाकुण्ड, गोवर्धन, चकलेश्वर, मानसी गंगा, चन्द सरोवर, डीग ( लगावन ), कामवन, वृषभाकपुर, संकेतवन, नन्दग्राम, दधिग्राम, शेषशायी, खेलवन, चीर घाट, नन्द घाट, बेलवन,

मोठवन, भाण्डीरवन, खेलन वन, मानसरोवर, लोहवन, बलदेव (दाऊ जी), ब्रह्माण्ड घाट, गोकुल, महावन आदि स्थान दर्शनीय हैं। यह श्रीकृष्ण भगवान का विहार-स्थान था इसलिये यहां बहुत सी वस्तुएँ तथा स्थान देखने योग्य हैं।

## मायावरम्

तंजोर (मद्रास) जिले में मायावरम् स्टेशन है। यहां पर एक प्रसिद्ध शिव मन्दिर तथा सरोवर है। कार्तिक मास में मेला होता है।

## मायापुर

नदिया (बंगाल) जिले में भागीरथी गंगा और खडुआ नदी के संगम के मध्य में है। यहां श्री गौड़ीय मठ का विशाल मन्दिर और श्री चैतन्य महाप्रभु का मन्दिर है।

## मण्डपेश्वर के गुफा मन्दिर

कनारी पहाड़ी से ४ मील पश्चिम और बार बोली स्टेशन से १ मील की दूरी पर दक्षिणी भारत में मंडपेश्वर की ३ गुफाएँ हैं। इनमें देवी, देवताओं की मूर्तियां हैं जो दर्शनीय हैं। समीप ही कनारी के गुफा मन्दिर तथा तुलसी झील भी दर्शनीय हैं। कनारी में १०९ गुफा मन्दिर हैं।

## महाकालेश्वर

उज्जैन में क्षिप्रा नदी के पास एक तालाब के किनारे महा-कालेश्वर का मन्दिर है।

## महाबलीपुर के गुफा मन्दिर

मद्रास से लगभग ३५ मील दक्षिण चेंगल पट्ट जिले में इसी

स्टेशन के समीप महाबलीपुर के गुफा मन्दिर हैं। यह मन्दिर नहर और समुद्र के मध्यवर्ती भाग में शिला काट कर बनाये गये हैं। मूर्तियां भी शिला काट कर ही बनी हैं। यहां श्री गोबर्धनधारी कृष्ण, विष्णु, दुर्गा, द्रौपदी, अर्जुन, भीम, धर्मराज, बाराहजी और शिव जी आदि की मूर्तियां हैं।

## महाबलेश्वर

सतारा ज़िले ( बम्बई ) में बम्बई का मुख्य स्वास्थ्य स्थान है। यहां से कृष्णा नदी निकलती है। पहाड़ के ऊपर ७ मील लम्बी और तीन मील चौड़ी समतल भूमि है। यहाँ महाबलेश्वर का शिव मन्दिर प्रसिद्ध है।

## मल्लिकार्जुन

गंटूर मद्रास) रेलवे स्टेशन से ५१ मील की दूरी पर बिकुण्डा रेलवे स्टेशन है। वहां से मल्लिकार्जुन नामक तीर्थ स्थान को सड़क जाती है। मार्ग पहाड़ी तथा जंगली है। महादेव जी का मन्दिर श्री शैशल नामक पर्वत पर है। पास ही श्री पार्वती जी का भी मन्दिर है। यहां शिवरात्रि के समय मेला लगता है।

## मिथलेश्वर

जनकपुर के ईशान कोण में स्थित है।

## मिसरीख

नीमसार ( सीतापुर यू० पी० ) से ६ मील की दूरी पर है। महाराज दधीच ने यहीं पर तपस्या की थी और अपना शरीर गऊवों से चटवाया था। होली पर यहां मेला लगता है।

## श्री मुचुकुन्द

यह तीर्थ धौलपुर स्टेशन से तीन मील दूर है। यहां भाद्रपद मास में ऋषि पंचमी को मेला लगता है। ऊँचे स्थान पर स्थित होने के कारण वर्षा ऋतु में यहां का दृश्य बड़ा मनोहर हो जाता है। यहाँ एक सुन्दर सरोवर है जिसके चारों ओर पक्के घाट बने हैं। इसके पास ही बहुत से मन्दिर हैं। इक्ष्वाकु वंश के राजा मान्धाता के पुत्र मुचुकुन्द बड़े प्रतापी थे। देवासुर संग्राम में इन्होंने देवों की बड़ी सहायता की। इससे प्रसन्न होकर देवताओं ने इन्हें वर दिया कि जो कोई इन्हें सोने से जगावेगा वह भस्म हो जायगा। श्री मुचुकुन्द जी पर्वत की एक कन्दरा में सो रहे थे। इतने में मगध के राजा जरासन्ध का मित्र कालयवन श्री कृष्ण जी का पीछा करते करते यहां आ पहुँचा। श्री कृष्ण समझ कर उसने श्री मुचुकुन्द जी को जगा दिया। इससे वह तुरन्त भस्म हो गया। इसके बाद भगवान श्री कृष्ण ने मुचुकुन्द जी दर्शन दिये। यहाँ एक बड़ा यज्ञ हुआ। इससे इस स्थान का नाम श्री मुचुकुन्द तीर्थ पड़ा।

## मुक्तिनाथ

काठमंडू ( नैपाल की राजधानी ) से उत्तर गण्डकी नदी पर मुक्तिनाथ तीर्थ है। गण्डकी नदी में शालिग्राम निकलते हैं। गण्डकी को नारायणी नदी भी कहते हैं। नदी के आस पास लगभग बीस मन्दिर हैं। मुक्तिनाथ को शालिग्राम क्षेत्र भी कहते हैं। यहां शिव जी ने विष्णु भगवान को वर्दान देकर निवास किया था। और उत्तर बर्फीले स्थान में नीलकंठ महादेव है जहां उष्ण पानी का कुंड है।

## मुंबा देवी

बम्बई के बड़े नगर में कालबादेवी सड़क पर एक सरोवर के समीप मुम्बादेवी अथवा बम्बादेवी का मन्दिर है। इन्हीं देवी के नाम पर इस नगर का नाम मुम्बई या बम्बई पड़ा है।

## मुंगेर

मुंगेर (बिहार) जिला स्थान और बड़ा रेलवे स्टेशन गंगा तट पर है। यहां कष्ट हरणीघाट, सीता, राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न कुंड तथा मन्दिर दर्शनीय है। सीता कुंड का पानी गरम और वहां कोई स्नान नहीं करता है। माघी पूर्णिमा को मेला लगता है।

## मूल द्वारिका

पोर बन्दर से १२ मील पश्चिमोत्तर है कहा जाता है श्री कृष्ण भगवान मथुरा से प्रथमबार यहीं पधारे थे।

## यमुनोत्री

देहरादून से भल्डियाना तक सड़क जाती है उसके आगे धरासू चट्टी आती है। धरासू से यमुनोत्री को सड़क जाती है जिसकी लम्बाई ४७ मील है। यहाँ श्री यमुना जी कई धाराओं में बहती हैं। पुच्छ पर्वत पर यमुनोत्री नामक एक बन्दर है वहीं से श्री यमुना जी की उत्पत्ति होती है। यह सुमेरु पर्वत से मिला हुआ है। यहाँ पर यमुना जी का एक छोटा सा मन्दिर है तथा कई एक दर्शनीय कुण्ड हैं।

## श्री याज्ञवल्क्याश्रम

यहीं महर्षि याज्ञवल्क्य ने भगवान सूर्य से वेद पढ़ा था और स्मृति लिखी थी। यह धनुषा स्थान के समीप है।

## योगेश्वर का गुफा मन्दिर

बम्बई प्रान्त में थाना जिले में गुरुगाँव स्टेशन है। उसी के समीप सालसर टापू में योगेश्वर का गुफा मन्दिर है। इस गुफा मन्दिर की लम्बाई २४० फुट और चौड़ाई २०० फुट है। यहां मन्दिर में बहुत सी मूर्तियां हैं। योगेश्वर से ६ मील उत्तर मगयाना गुफा है।

## श्री योगनिद्र स्थान

खिरोई नदी के समीप नैपाल राज्य में है।

## रत्नागिरि

बम्बई हाते में दक्षिणी भाग में रत्नागिरी का प्रसिद्ध बन्दर गाह है। यहां रत्नासुर दैत्य रहता था जिसे शिव भगवान ने मारा था।

## राजमहेन्द्री

गोदावरी नदी पर समुद्र से ३० मील की दूरी पर है। गोदा-वरी की सात धाराओं में अंतिम धारा नरसापुर के निकट अन्तर वेदी में है। यह वशिष्ठ धारा समुद्र से मिलती है। यह सातों धाराएं पवित्र मानी जाती है।

## राजेश्वरी

यह स्थान मधुबनी के समीप डोकहर गांव में है यहां गौरी शंकर की मूर्ति स्थापित है।

## राजगृह

पटना ( बिहार ) जिले में यह स्थान है। यहां देवी देवताओं के मन्दिर तथा कुन्ड हैं। यहां मलमास के महीने में प्रसिद्ध मेला लगता है। यहीं सरस्वती कुण्ड से ६ मील की दूरी पर बैकुण्ठ नदी पर वैकुण्ठ तीर्थ है।

## रामड़ा

बेट द्वारिका से ६ मील दूरी पर है। यहां हिन्दू यात्री आकर शङ्ख, चक्र आदि की छाप लगवाते हैं।

## रामटेक

नागपुर रेलवे स्टेशन से २४ मील उत्तर पूर्व रामटेक स्थान है। यहां का पान प्रसिद्ध है। यहाँ श्रीरामचन्द्र जी का विशाल मन्दिर तथा अनेकों देवताओं के मन्दिर हैं। यहां कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है।

## रामनाद

मद्रास प्रान्त में रामेश्वरम् लाइन का यह एक प्रधान स्टेशन है। यहां रामेश्वरम् जाने वाले यात्री ठहरते हैं।

## रामेश्वर

यह रामनाद से २३ मील की दूरी पर मनार खाड़ी में यह टापू है। यह टापू ११ मील लम्बा और १ मील चौड़ा है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी ने लंका जाते समय टापू के पूर्वी तट पर रामेश्वरम् शिवलिंग की स्थापना की थी। रामेश्वर मन्दिर २० बीघे में है। यहां शिव जी का बड़ा मन्दिर, लक्ष्मण तीर्थ,

रामतीर्थ, रामझरोखा, सुग्रीवतीर्थ, ब्रह्मकुन्ड, धनुषकोटि, अग्नि-तीर्थ, अगस्त तीर्थ आदि स्थान देखने योग्य हैं। यह हिन्दुओं का पवित्र दक्षिणी धाम है। यहां से लंका को अग्निबोट जाते हैं।

## रुद्र प्रयाग

हरिद्वार से केदारनाथ जाने वाली सड़क पर भट्टी सेटा चट्टी के आगे रुद्रप्रयाग तीर्थ है। यह पवित्र स्थान मन्दाकिनी गंगा और अलकनन्दा गङ्गा के संगम पर स्थित है संगम के समीप ही रुद्रेश्वर महादेव का मन्दिर है जिसमें ताड़केश्वर, गोपालेश्वर और अन्नपूर्णा देवी की मूर्तियाँ हैं। रुद्र प्रयाग के आगे गुप्त काशी, योग चट्टी, बादल चट्टी, पाटागाट चट्टी, त्रियुगीनारायण, शाकम्भरी देवी के मन्दिर आदि स्थान हैं।

## रोबालसर

पंजाब प्रान्त में होशियार पुर से ६० कोस की दूरी पर रोबा-लसर झील है। झील में लकड़ी के बेड़े पर वृक्ष लगे हैं। वहाँ देव मूर्तियां हैं जिसे यात्री गण पूजते हैं। लोग बेड़े को तैरता हुआ द्वीप समझते हैं।

## श्री रंगनाथ का मन्दिर

शिवसमुद्रम टापू में श्री रंगनाथ का मन्दिर है। पास ही भार्गव नदी तीर्थ है।

## श्रीरङ्गपट्टनम्

मैसूर नगर से ९ मील पूर्वोत्तर यह रेलवे स्टेशन है। यहां कावेरी के टापू में श्री रंगनाथ स्वामी का मन्दिर है। गौतम ऋषि ने यहाँ पूजन किया था।

## ऋषिकेश

यह तीर्थ हरिद्वार के समीप ही गङ्गा तट पर है। यहां गङ्गा स्थान तथा भरतजी के मन्दिर का दर्शन होता है। बाबा काली कमली वाले का प्रधान कार्यालय यहीं पर है। ऋषिकेश से थोड़ी दूर पर कैलाश आश्रम दर्शनीय स्थान है। पास ही मौनी बाबा की रेती है जहां टेहरी राज्य की ओर से यात्रियों के सामान को ले जाने के लिये कुलियों का प्रबन्ध है। ऋषि केश में बड़े बड़े साधु रहते हैं।

लक्ष्मण झूला ऋषि केश से तीन मील की दूरी पर है। यहाँ लक्ष्मण जी का मन्दिर प्रसिद्ध है। यहाँ गंगा जी को पार करने के लिये लोहे का पुल बना है। गंगा के दूसरे तट पर सीता कुण्ड सूर्यकुण्ड और स्वर्गाश्रम देखने योग्य स्थान है।

## लकुन्डी

बम्बई प्रान्त में एम० एस० एम० आर० रेलवे के जङ्कशन से लगभग ८ मील की दूरी पर लकुन्डी बस्ती है। यहाँ बहुत से मन्दिर हैं। पास ही काशी विश्वनाथ, नन्दीश्वर शिवजी, मलिनन्दार्जुन शिवजी और मणिकेशव के मन्दिर हैं।

## लिम्बड़ी

काठियावाड़ के लिम्बड़ी राज्य की राजधानी लिम्बड़ी नाम का रेलवे स्टेशन और कस्बा है। यहाँ बहुत से मन्दिर व दर्शनीय स्थान है यहाँ श्री सत्यनारायण जी का मन्दिर प्रसिद्ध है।

## वृन्दावन तथा समीपवर्ती स्थान

यह संयुक्त प्रान्त में मथुरा से ६ मील की दूरी पर पवित्र प्रसिद्ध स्थान है। यहां तक रेलवे लाइन तथा सड़क जाती है। यह श्री कृष्ण भगवान की लीला की मुख्य भूमि है। तुलसी के बन होने के कारण इस स्थान का नाम वृन्दावन पड़ा। इसकी परिक्रमा ५ कोस (दस माल) की है। इसके अंतर्गत कालीदह अद्वैतघाट श्री बांकेबिहारी जी, श्री राधावल्लभ जी, छोटे राधा-रमण जी, निधिवन श्री गोपी नाथ जी, श्रीगोकुलानन्द जी, गोपेश्वर महादेव जी ब्रह्मचारी जी का मन्दिर, ब्रह्मकुण्ड श्रीरंगनाथ का मन्दिर विजय अटल बिरारी जी, गोविन्ददेव जी, ज्ञानगुदड़ी जयपुरवाला मन्दिर, जैत, गरुड़ गोबिंद, अक्रूर घाट और मतरोण आदि स्थान दर्शनीय हैं।

श्रीवृन्दावन यमुना जी के दाहिने तट पर स्थित है कोशीघाट धीरसमीर, बशीघाट, टिकारीघाट, जगन्नाथ घाट, पानीघाट, राजघाट, बाराह घाट, सूर्यघाट, युगलघाट, विहारघाट, शृंगार-घाट, चीरघाट, और भ्रमर यहां के प्रसिद्ध घाट हैं।

## बृहस्पति-कुण्ड

यह स्थान जी० आई० पी० की अतर्रा स्टेशन (जो करवी और बांदा के बीच में पड़ती है) के पास है। दूसरी ओर सतना स्टेशन भी पास पड़ता है। कहा जाता है कि बाराह अवतार के समय पृथ्वी विष्णु के बोझ से विकल हो गई और उसका पसीना पर्वतों से जलरूप होकर निकलने लगा। यही शैलोदक पर्वत का जल कहलाता है। कालिंजर से कुछ दूर दक्षिण की ओर बृहस्पति

कुण्ड तीर्थ है। कुछ लोगों का कहना है कि इसके प्रयोग से कई असाध्य रोग अच्छे हो जाते हैं।

## बाला जी

मद्रास प्रान्त में रेणगुण्टा जंकशन (एम० एस० एम० आर०) से १२ मील को दूरी पर तिरुपला पहाड़ी पर वेङ्कटाचल चोटी है। इसी चोटी पर विख्यात बाला जी की पाषाण मूर्ति शङ्ख, गदा, पद्म, धारण किये हुये स्थापित है। यहां दशहरे पर प्रति वर्ष धूम-धाम के साथ रथ यात्रा होती है।

## विष्णु प्रयाग तीर्थ

यह स्थान श्री केदारनाथ धाम से लगभग ६४ मील की दूरी पर स्थित है। यहां पर अलकनन्दा और विष्णु गंगा का संगम है। वहां संगम पर स्नान करने में बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है।

## विष्णु-कांची

यह शिवकांची तीर्थ से ३ मील को दूरी पर हैं। यह वैष्णवों का प्रधान स्थान है। यहां सुनहरा गरुण स्तम्भ और बरदराज भगवान का बड़ा मन्दिर है। यहां रामानुचार्य जी की गद्दी है।

## विंध्याचल

यह स्टेशन मिर्जापुर (यू० पी०) से ५ मील पश्चिम है। यह ई० आई० आर० पर है। यहां की प्रधान देवी कौशिकी और कात्यायिनी हैं। इसके सिवा भगवती, काली, अष्टभुजी आदि देवियों के मन्दिर हैं। प्रतिवर्ष चैत्र मास में भगवती का मेला लगता है जिसमें लाखों की भीड़ होती है।

## विरूपाक्ष

मद्रास प्रान्त में होसपेट स्टेशन से ७ मील पूर्व हांपी गांव के पास रेलवे लाइन के पार अञ्जनी पहाड़ी पर विरुपाक्ष शिव मन्दिर है। मन्दिर में सोनहला कलश लगा है। पास ही हेमकूट पहाड़ी १२ देवमन्दिर हैं। यहाँ धार्मिक यात्री दर्शन को जाते हैं।

## वेलूर

मद्रास प्रान्त में कटपट्टी जंकशन से ६ मील दक्षिण की ओर वेलूर रेलवे स्टेशन है। यहां बस्ती में श्री जलंधेश्वर का प्रसिद्ध शिव मन्दिर है।

## वेलूर तीर्थ

मैसूर राज्य में वानतार स्टेशन से २० मील दक्षिण-पश्चिम और हलवेणी से १० मील की दूरी पर एक नदी के तट पर यह स्थान है। यहाँ चक्र केशव का मन्दिर है। मन्दिर के घेरे में ६ बीघे का कला आंगन है।

## वेंकट गिरि

काल हस्ती तीर्थ से १६ मील पूर्वोत्तर वेङ्कटगिर का रेलवे स्टेशन है। यहां काशीपीठ में विशालाक्षी, अन्नपूर्णा, काल भैरव, सिद्ध विनायक, श्रीरामचन्द्र जी, हनुमान जी आदि के मन्दिर हैं।

## वैद्यनाथ धाम

बिहार प्रान्त में सन्थाल परगना में देवगढ़ कस्बा है जिसे देवघर और बैद्यनाथ धाम कहते हैं। यहां वैद्यनाथ शिव लिंग का विशाल मन्दिर है। यह भारत के द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में है।

लिंग की प्रतिमा १२ अंगुल ऊँची है। अन्य लिङ्गों की अपेक्षा यह छोटी इस कारण बतलाई जाती है कि रावण ने इसे उखाड़ने का प्रयत्न किया था इस कारण यह पृथ्वी में प्रवेश कर गई है। लिंग के चारों ओर चाँदी की शलाका है। लिङ्ग पर गंगा जल चढ़ाने का बड़ा महात्म है। इस मन्दिर में एक पीपल का वृक्ष है। प्राचीन काल में जिन यात्रियों को धन की आवश्यकता होती थी वह इस वृक्ष के नीचे तप करते थे और शिव जाप करते हुये अन्न जल ग्रहण नहीं करते थे जब शिव भगवान प्रसन्न होते थे तो पीपल के वृक्ष से एक पत्ता गिरता था जिस पर किसी व्यक्ति का नाम व पता लिखा रहता था। पंडे को दिखलाने पर पंडा उस पत्ते पर हुँडी लिखता था जिसे बैद्यनाथ हुँडी कहते थे। वह हुँडी पत्ते पर लिखे हुये नाम के व्यक्ति के पास भेजी जाती थी और वह हुँडी पर लिखा हुआ धन चुकाता था। इस प्रकार की हुँडियों की चर्चा यदुनाथ सरकार ने अपनी "औरंगजेब के समय का भारत" नामक पुस्तक में की है। अब ऐसा नहीं होता है।

यहाँ श्री लक्ष्मीनारायण, सावित्री पार्वती, काली, गणेश, बगुला देवी, अन्नपूर्णा, आनन्द भैरव दूधनाथ, कार्तिकेय, सूर्य, कालभैरव, श्रीरामचन्द्र, हनुमान जी, मंगला देवी, गायत्री देवी, गङ्गा, यमुना, गौरीशंकर, नर्मदेश्वर आदि मन्दिर दर्शनीय हैं। पास ही शिवलिंग सरोवर, चिता भूमि आदि देखने योग्य स्थान हैं।

## शंखोद्धार

द्वारिका कृष्ण महल से प्रायः डेढ़ मील दूर टापू के भीतर
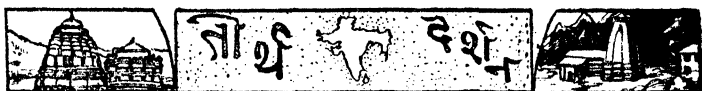
शङ्खोद्धार नामक तीर्थ है। यहां शंख नामक सरोवर और शङ्ख नारायण का मन्दिर है। यहीं कृष्ण भगवान ने शङ्खासुर का उद्धार किया था।

## शबरी नारायण

बिलासपुर (सी० पी०) जिले में महानदी और शिवनाथ नदी के संगम से १० मील पश्चिम शिवनाथ नदी के तट पर शबरी नारायण का प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां श्री शबरी नारायण राम लक्ष्मण और शिव के मन्दिर हैं। यहां विजया दशमी और शिवरात्रि को मेला लगता है।।

## शत्रुञ्जय पहाड़ी

पालीटाणा राज्य में पालीटाणा नगर से डेढ़ मील को दूरी पर शत्रुञ्जय पहाड़ी है। यह जैन लोगों की पांच पहाड़ियों में सबसे अधिक पवित्र है। यह समुद्र-धरातल से १९८० फुट ऊँची है। यहां आदि नाथ हनुमानजी आदि के मन्दिर हैं। पहाड़ी पर दो चपटे शिखर हैं जो दृढ़ दीवार के घेरे में हैं। घेरे में १९ फाटक तथा बहुत से मन्दिर हैं।

## शान्ति कुण्ड

यह भागीरथी के तट पर नदिया ज़िले में एक बड़ा कस्बा है। यहां पर कई एक देव मन्दिर हैं। कार्तिकी पूर्णिमा को गङ्गा स्नान तथा श्रीकृष्ण रासलीला का मेला होता है।

## शिव सागर

आसाम प्रान्त में शिवसागर जिले में ब्रह्मपुत्र नदी से ६ मील

की दूरी पर यह बस्ती है। यहां पर एक बड़ा सरोवर ११४ एकड़ में हैं जिसे शिव सागर कहते हैं। तालाब के किनारे बहुत से मन्दिर हैं।

## शिव कांची

यह दक्षिणी भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ है और शैवों का प्रधान क्षेत्र है। यहीं श्री पार्वती जी ने शिव जी को पति रूप में पाया था। यहां पर श्री एकामेश्वर शिव भगवान का मन्दिर है। यहां कामाक्षा देवी और बामन भगवान के मन्दिर तथा जगमोहन स्थान और तेप्युकुलम् और सर्व तीर्थ सरोवर देखने योग्य हैं।

## शिव समुद्रम

कोयम्बटूर जिले में मद्दूर रेलवे स्टेशन से पश्चिम की ओर कावेरी नदी की दो धारा हो जाती है। दोनों धाराओं के मध्य में शिव समुद्रम नामक टापू है। यहां का शिव समुद्रम जल प्रपात प्रसिद्ध है। इन्हें गगनच्युत तीर्थ तथा सप्त धारा तीर्थ कहते हैं।

## शुक्र तीर्थ

भड़ौंच ( बम्बई ) से १० मील की दूरी पर नर्मदा तट पर शुक्र तीर्थ है। वहां कवि, ओंकारेश्वर के समीप श्री शुक्र नारायण की मूर्ति है। यहां कार्तिक मास में मेला होता है। नर्मदा नदी पर के तीर्थों में यह सबसे अधिक पवित्र माना जाता है और ब्रह्म-हत्या का निवारण यहां के दर्शन मात्र से होता है।

## श्री शिलानाथ

दरभंगा जिले के शिलानाथ ग्राम में कमला नदी के तट पर है। यहां कार्तिक पूर्णिमा को मेला होता है।
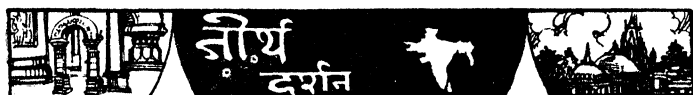
## शृंगेरी मठ

मैसूर राज्य में कदूर जिले में तुङ्ग नदी पर शृंगेरी नामक पवित्र गांव है। इससे ९ मील पश्चिम शृंगगिरि पहाड़ी है। यहां शृंगि ऋषी का जन्म हुआ था। यहां श्री शंकराचार्य की स्थापित गद्दी, श्रृंगेरी मठ तथा शारदा देवी और शिव मन्दिर है।

## श्रीरंगम

त्रिचनापल्ली (मद्रास) जिले में कावेरी नदी का श्रीरंगम टापू तथा कस्बा है जहां श्रीरंगम का प्रसिद्ध मन्दिर है। यहां अनेकों वस्तुएँ देखने योग्य हैं। यह बड़ा ही पवित्र स्थान माना जाता है। यहां पौष सुदी १ से ११ तक बड़ा मेला लगता है।

## श्रीनगर

इसको शिव प्रयाग भी कहते हैं। यह प्राचीन नगर अलकनन्दा गङ्गा के तट पर बसा है। यहां पर श्री कमलेश्वर महादेव जी का मन्दिर है।

## श्रीनगर

काश्मीर की राजधानी है। यहां जाने के लिये कई मार्ग हैं। रावलपिंडी से जो मार्ग जाता है वह सभी मार्गों से अधिक अच्छा और सुगम है। यह झेलम नदी के दोनों तट पर बसा है। नगर में नदी के ऊपर ७ पुल बने हुये हैं और नदी के घाट पक्के हैं। इस नगर का प्राकृतिक सौंदर्य बड़ा ही मनोहर है।

## श्री क्षेत्र

यह लखदेई नदी के तट पर जनकपुर से पश्चिम पुनौरा ग्राम

में है। सीरध्वज श्री जनक जी की यहीं यज्ञस्थली थी। यहीं श्री सीता जी पृथ्वी से प्रकट हुई थीं।

## श्री धनुषा स्थान

जनकपुर से पूर्व है। यहां शङ्कर पिनाक का एक भाग २५ गज़ लम्बा अब भी पड़ा है।

## श्री दुर्गा स्थान

दरभंगा जिले में यह गांव स्थित है। यहां काली जी का मन्दिर है। इन्हीं दुर्गा भवानी की आराधना कुमुद-कलाधर-कालीदास ने की थी और महान विद्वान हुये थे।

## संडीला

( नैमिषारण्य ) लखनऊ से पश्चिम की ओर लगभग ३० मील की दूरी पर संडीला नामक स्टेशन तथा कस्बा है। यहां सूरदास जी रहा करते थे। यहीं से नैमिषारण्य मिश्रिक और हत्याकरण तीर्थ को लोग जाते हैं। नैमिषरण्य में शौनकादि अठासी हजार ऋषि रहते थे। फागुन की अमावस को इसकी परिक्रमा आरम्भ होती है और पूर्णिमा को परिक्रमा समाप्त होती है। परिक्रमा में चक्रतीर्थ, पञ्च प्रयाग, मिश्रिक और हत्या करण नामक स्थान प्रधान हैं। इस स्थान का दर्शन करने के लिये प्रति वर्ष लाखों यात्री आते हैं।

## सम्भल

यह मुरादाबाद ( यू० पी० ) जिले में है। यहां रेलवे लाइन तथा पक्की सड़क जाती है। इसका विस्तार २४ कोस का है।

यहाँ ६८ तीर्थ बतलाये जाते हैं। यहां अनेकों स्थान दर्शनीय हैं। भावी कलंकी भगवान इसी नगरी में औतार लेंगे।

## सारनाथ

यह बनारस से ४ मील उत्तर की ओर है। बनारस से सीधी पक्की सड़क जाती है। यह बी० एन० डब्लू० आर० का स्टेशन भी है। भगवान बुद्ध ने इसी स्थान पर अपने पांच शिष्यों को उपदेश दिया था। बारहवीं सदी में मुहम्मद गोरी ने इसे नष्ट कर डाला था। प्राचीन खंडहर, अशोक की लाट, बुद्ध जी का मन्दिर, धमेष स्तूप, चौखंडी स्तूप, कौतुकालय, (अजायबघर) जैन मन्दिर, मूलगंध कुटी और नवीन विहार आदि स्थान दर्शनीय हैं।

## सांची

ग्वालियर राज्य में सांची का स्टेशन भेलसा से ५ मील की दूरी पर है। यहां ११ बौद्ध स्तूप हैं। पास ही सोनारी में ८ स्तूपों का झुण्ड है।

## साखी गोपाल

जगन्नाथपुरी से ११ मील की दूरी पर यह मन्दिर रेल पर है। मन्दिर प्रधान मूर्ति साक्षी गोपाल राधाकृष्ण की है। कहते हैं कि एक बार दो ब्रह्मण देशाटन करते करते वृन्दावन गये वहां एक बीमार पड़ गया। दूसरे ने उसकी बड़ी सेवा की तो बीमार ब्रह्मण ने उसे अपनी पुत्री देने का बचन दिया। बीमार ब्राह्मण उत्तम कुल का था और दूसरा मध्यम कुल का। जब वह गांव पहुँचे तो गाँव वालों ने उत्तम मध्यम का विचार करके कहा कि

विवाह होना कठिन है इस पर सभा हुई और तय हुआ कि यदि बचन देने को साक्षी हो जाय तो ब्याह अवश्य ही होगा। इस पर मध्यम कुल का ब्राह्मण फिर बृन्दाबन गया और श्री कृष्ण की आराधना किया। भगवान उसकी सेवा से प्रसन्न होकर उसकी साक्षी देने गये इसी पर यह मन्दिर साक्षी गोपाल का बनाया गया और वहीं उनकी स्थापना हुई।

## सारसपुर

अहमद नगर के समीप सारस पुर गांव है। यहां चिन्तामणि का उत्तम जैन मन्दिर तथा तीर्थ है।

## सिद्धपुर

बड़ौदा राज्य में कड़ी परगने में ऊँझा से ८ मील दक्षिण-पश्चिम सिद्ध पुर रेलवे स्टेशन है। यह सरस्वती नदी के तट पर है। यहां कपिल देव मुनि का जन्म हुआ था यहां रणछोर जी का भी मन्दिर है। यहां सरस्वती नदी, रुद्रमहालय गोबिन्द राव तथा माधव राव का मन्दिर और बिंदसर प्रधान स्थान हैं।

## सीतामढ़ी

जनकपुर (विहार) रोड या पुपड़ी स्टेशन से १६ मील की दूरी पर सीतामढ़ी का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से एक मील की दूरी पर लषन देई नदी है। उसी पर सीता मढ़ी गांव है। यहां मन्दिरों में सीता, श्री रामचन्द्र, लक्ष्मण, शिव, हनुमान, गणेश आदि देवताओं की मूर्तियां हैं। सीतामढ़ी से एक मील की दूरी पर पुनउड़ा गांव है जहां एक पक्का सरोवर है। लोग कहते हैं कि इसी स्थान पर अयोजना सीता जी का जन्म हुआ था।

## सींगेश्वर

भागलपुर ( बिहार ) जिले में राघव पुर स्टेशन से २५ मील दक्षिण एक छोटी नदी के तट पर सींगेश्वर बस्ती है। यहीं एक घेरे में सींगेश्वर महादेव का मन्दिर है। मूर्ति का शुद्ध नाम श्रंगेश्वर नाथ है। फागुन मास में यहाँ दो सप्ताह तक मेला लगता है। मेले का प्रधान दिन शिवरात्रि है। बैशाख को शिवरात्रि को कुछ हल्का मेला होता है। इसका इतिहास इस प्रकार है :—एक बार शिव जी मन्द्राचल पर्वत से बन में घूमने चले गये। देवता गण उन्हें ढूंढ़ने निकले और अन्त में उन्हें एक बन में पाया शिव जी ने देवताओं को देख कर मृगा का भेष बना लिया परन्तु देवताओं ने उन्हें पहचान लिया। इन्द्र ने श्रंग भाग ब्रह्मा ने बीच का और बिष्णु ने पिछला भाग पकड़ा। इस पर मृग के तीन भाग हो गये और शिव जी अन्तर ध्यान हो गये। इन्द्र अपना भाग लेकर आकाश चले गये। शेष दोनों भाग गौकर्ण नाम से प्रसिद्ध हुये। विष्णु ने संसार हित के लिये अपना खण्ड स्थापित किया जो श्रंगेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

## सीता धाम

राजपूताने के प्रताप गढ़ राज्य में सीताधाम एक बड़ा तीर्थ है। यह स्थान मेवाड़ की बड़ी सादगी से १४ मील दूर और उसके तल से तीन चार सौ गज़ नीचा है। पड़ोस का प्रदेश उजाड़ और वीरान है। परन्तु सीताधाम एकदम हरा भरा और मनोहर है। एक नदी इस स्थान का कई बार चक्कर काटती हुई आगे बढ़ती है। एक स्थान पर नदी के बीच में एक द्वीप है

जिससे नदी की दो धारायें बनाई गई हैं। एक धारा का जल गरम और दूसरी का शीतल है। कहा जाता है कि सीता जी ने यहीं अग्नि परीक्षा दी थी। इससे एक धारा का पानी गरम हो गया। पास पानी के अत्यन्त गहरे कुण्ड हैं। लोगों की धारणा है कि पापी कुण्ड में स्नान करने से पाप नष्ट हो जाते हैं और धर्मी कुण्ड में स्नान करने से हृदय पवित्र हो जाता है।

## सीता कुण्ड

चटगांव (बंगाल) जिले में फैनी रेलवे स्टेशन से ३२ मील दक्षिण-पूर्व सीताकुण्ड बस्ती है। ११५५ फुट ऊँची पहाड़ी के ऊपर सीता कुण्ड स्थित है। इस कुण्ड का जल सदैव गरम रहता है। यदि इस कुण्ड के पास बत्ती ले जाई जाती है तो आग बारूद की भांति भभक उठती है।

## सुदर्शनचक्र

यह नैमिषारण्य तीर्थ में है।

## सुदामा पुरी

जूनागढ़ में जेतपुर से पोरबन्दर जाने वाली लाइन के समीप सुदामापुरी गांव है। इसी स्थान पर सुदामा जी 'श्री कृष्ण भगवान के मित्र तथा सहपाठी रहा करते थे।

## सूर्य मन्दिर तीर्थ (मार्तण्ड)

यह स्थान काश्मीर में इसलामाबाद से साढ़े चार मील उत्तर-पूर्व घाटी के ऊपर है। यहां भारत भर के यात्री दर्शन करने जाते हैं।

## सूरत

नौसारी ( बम्बई प्रान्त ) रेलवे स्टेशन से १८ मील उत्तर सूरत का स्टेशन है। यह तापती के तट पर समुद्र से १० मील की दूरी पर है। यहां पर बहुत से हिन्दू देव मन्दिर हैं जिनमें स्वामी नारायण और हनुमान जी के विशाल मन्दिर हैं। यह बल्लभ कुल सम्प्रदाय का प्रधान केन्द्र है।

## सोमनाथपुर

मैसूर राज्य में है। यहां शिव तथा चन्द्र केशव के मन्दिर हैं। पास ही मयूर के पास कदम्ब नदी पर योगनरसिंह स्वामी तथा वरदराज के मन्दिर हैं।

## सोमनाथ पट्टन

काठियावाड़ ( जूनागढ़ राज्य में ) सोमनाथ पट्टन स्थान पर है। यहां सोमनाथ का प्राचीन तथा नवीन मन्दिर, प्राचीन त्रिवेणी, यादव स्थल, वाण तीर्थ, भालक तीर्थ, प्रभास क्षेत्र आदि पवित्र दर्शनीय स्थान है। सोमनाथ का मन्दिर एक बड़ा ही प्रसिद्ध तथा पवित्र मन्दिर है।

## सोनगिरि

झांसी से २२ मील और दतिया से ७ मील की दूरी पर सोनागिरि का स्टेशन है। यहां जैन संतों की समाधियां हैं। पास ही राजमहल में जैन मन्दिर हैं।

## सोन प्रयाग

रुद्र प्रयाग से श्री केदारनाथ धाम वाले मार्ग पर त्रियुगी नारायण के आगे सोन प्रयाग तीर्थ है। यहाँ बासुकी और

मन्दाकिनी गंगा का संगम है। गंगा जी के ऊपर लोहे का पुल है। सोन प्रयाग के समीप ही सिर कटा गणेश, गोटी कुण्ड, चोर पटिया भैरों, अमार चट्टी आदि स्थान हैं।

## सोरों

यह एटा ( यू० पी० ) जिले में गंगा तट से ५ मील दूरी पर रेलवे स्टेशन है। श्री गंगा जी ने बस्ती को छोड़ दिया पर घाट तथा मन्दिर अब भी हैं। यहाँ बाराह जी का मन्दिर प्रधान है। इसे बाराह तीर्थ भी कहते हैं। यहाँ प्रति वर्ष अगहन सुदी एकादशी को मेला लगता है।

## हरिद्वार ( मायापुरी )

हरिद्वार का स्टेशन ई० आई० आर० की शाखा लाइन ( जो लकसर जंकशन से देहरादून जाती है पर स्थित है। हरिद्वार कनखल और मायापुर पास ही पास बसे हैं। हरिद्वार में ४५ धर्मशालाएँ हैं।

यह भारतवर्ष का एक पवित्र नगर है। हरि की पौड़ी घाट स्नान के लिये सबसे प्रसिद्ध है। यह नगर गंगा तट पर बसा है। हरिद्वार में गंगा जी की छटा देखने योग्य है। यहां कुम्भ का मेला हर बारहवें वर्ष लगता है।

हरिद्वार में ब्रह्म कुण्ड, मनसा देवी का मन्दिर, कुशावर्त ल्विकेश्वर, गौरीकुण्ड, नील पर्वत, चण्डी देवी, गौरीशङ्कर महादेव, आदि स्थान देखने योग्य हैं।

कनखल तीर्थ हरिद्वार से तीन मील दक्षिण की ओर सड़क पर है। यह गंगा जी के दक्षिणी तट पर बसा है। यहां गंगा

स्नान का महात्म है। दक्ष प्रजापति नीलेश्वर महादेव, श्रीकृष्ण मन्दिर और सती कुण्ड यहां प्रसिद्ध स्थान हैं।

श्रवण नाथ महादेव का मन्दिर, श्री गङ्गा जी का मन्दिर, चौबीस औतार, भीम गोड़ा, आसादेवी, मायादेवी, मायापुर तथा सत्यनारायण चट्टी आदि दर्शनीय हैं।

हरिद्वार और देव प्रयाग के बीच ऋषिकेश लक्ष्मण झूला गरुड़ चट्टी, नई मोहन चट्टी, बन्दर भेल चट्टी, महादेव चट्टी, व्यास चट्टी, छालड़ी चट्टी और उमरास चट्टी आदि दूसरे दर्शनीय स्थान हैं।

## हस्तिनापुर

मेरठ जिले में मेरठ नगर से २१ मील की दूरी पर खलौती एक रेलवे स्टेशन है। वहां से लगभग एक मील चलकर हस्तिनापुर का नगर है। प्राचीन काल में यह एक जगत विख्यात नगर कौरवों और पांडवों की राजधानी थी। यहाँ एक शिव मन्दिर है और साधु लोग रहते हैं।

## हलेबीड़ के मन्दिर

मैसूर राज्य में बानावार स्टेशन से २० मील की दूरी पर हलेबीड़ स्थान है। यहां प्राचीन मन्दिरों के खंडहर, हौसलेश्वर तथा केदारेश्वर के मन्दिर हैं।

## हरिहर

मैसूर राज्य और और बम्बई प्रान्त की सरहद पर तुङ्गभद्रा नदी के तट पर रेलवे स्टेशन है। यहां पर शिव मन्दिर है।

## हरिहर क्षेत्र

बिहार प्रान्त में छपरा से २९ मील की दूरी पर सोनपुर बी० एन० डब्लू० आर० का रेलवे स्टेशन है। सारन जिले में गण्डकी नदी के तट पर गंगा तथा गंडक नदी के संगम के निकट सोनपुर बस्ती है। यहीं माही नदी के समीप श्री हरिहर नाथ महादेव का मन्दिर है। यहां कार्तिकी पूर्णिमा को हरिहर क्षेत्र का प्रधान मेला लगता है। यह मेला लगभग दो सप्ताह तक होता है। यह हिन्दुओं का अति प्राचीन तथा पवित्र क्षेत्र है।

## हंस तीर्थ प्रयाग

प्रयाग से पूर्व गंगापार प्रतिष्ठानपुर (झूसी) में श्री हंस भगवान के नाम से यह तीर्थ प्रसिद्ध है। प्राचीन हंस तीर्थ हंस कूप के निकट था जहां ईदगाह बनी है। पिछला भाग अब भी प्राचीन बना है। यहां त्रिकुटी, अन्तः करण, भ्रम गुफा, सुशुमता कूप, मेरुदण्ड, मान सरोवर आदि स्थान दर्शनीय है। समस्त आश्रम एक योगी के चित्र सा बना है। इस स्थान के निर्माण कर्ता हंस सम्प्रदाय के महन्त श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। यह स्थान अति सुन्दर तथा दर्शनीय है।

## त्र्यम्बकेश्वर तीर्थ

नासिक जिले में नासिक से १८ मील की दूरी पर त्र्यम्बक बस्ती है। यह पहाड़ी पवित्र तीर्थ है। यह लगभग १५०० फुट ऊँची एक पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ त्र्यम्बकेश्वर महादेव का मन्दिर है जिसके दर्शन के लिये लाखों यात्री आते हैं। यहां कुशा

पर्वत नामक कुण्ड तथा और दूसरे देवी-देवताओं के मन्दिर हैं। पास ही ब्रह्मागिरि पर्वत पर गोदावरी का निवास स्थान है।

## त्रिचनापल्ली

मद्रास प्रान्त में त्रिचनापल्ली का बड़ा स्टेशन तथा नगर है। नगर के पास ही २५० फुट ऊँची पहाड़ी है जिस पर बहुत से मन्दिर हैं। मन्दिरों में श्री गणेश जी, शिवजी, पार्वती जी और कार्तिकेय जी के मन्दिर प्रसिद्ध हैं। यहां भादों मास में बड़ा मेला लगता है।

## त्रियुगीनारायण

रुद्र प्रयाग के आगे पाटा गाड़ चट्टी है। इस चट्टी के आगे दो सड़कें हो जाती हैं। बाएँ ओर वाली सड़क कठिन पर्वतीय मार्ग में होकर त्रियुगी नारायण को जाती है। यहाँ त्रियुगी नारायण ( विष्णु भगवान ) का मन्दिर है। भगवान के नाभि से सरस्वती गंगा की धारा निकलती है जिसका जल सरस्वती कुण्ड में होकर अन्यान्य कुण्डों में जाता है। यहां पर अनेकों देवी देवताओं की मूर्तियां हैं। भगवान के सभामंडप में एक धूनी जलती है जिसके लिये कहा जाता है कि वह त्रेतायुग से जल रही है और कभी नहीं बुझी। इसी स्थान पर पार्वती जी का ब्याह शिव जी से हुआ था।